SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा अर्चना

अंक - 18

अवधिः जुलाई-2022 से दिसम्बर-2022

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-I)

राजस्थान, जयपुर

महालेखाकार कार्यालय परिसर में स्थित चारों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ऑडिट सप्ताह - 2022 के दृश्य

“लेखापरीक्षा अर्चना” परिवार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर

की हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका

संरक्षक

के. सुब्रमण्यम
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर

परामर्शदात्री

श्रीमती मीना कुमारी मीणा
वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन

संपादक मण्डल

प्रबन्ध सम्पादक
श्री अरूण कुमार शर्मा
कल्याण अधिकारी

संपादक
श्री वीरेन्द्र सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सहायक संपादक

सुश्री रश्मि राज
कनिष्ठ अनुवादक

श्री जगदीश प्रसाद
लेखापरीक्षक

https://cag.gov.in/ag1/rajasthan/hi

मूल्यः- राजभाषा के प्रति निष्ठा

आवरण पृष्ठः जयपुर स्थित सिटी पार्क का चित्र

हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश

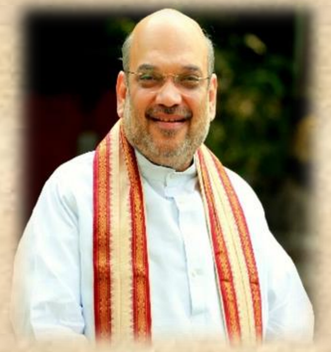

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री,
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो ।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थी और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित है। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आजादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आदोलन को गति प्रदान की। ‘स्वराज’ प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजमाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हो और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त

किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजमाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम-काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में मूह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यो की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13 - 14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमो से हिंदी प्रेगियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस 2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन साधारण के लिए 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा - भाषी अपनी - अपनी मातृभाषाओं से निशुल्क हिंदी सीख सकते है। राजभाषा विभाग के ई- महाशब्दकोश में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई-सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी 'बृहत शब्दकोश' के निर्माण पर भी काम शुरू किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी है, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई है और जिन्होंने अपनी शब्द - संपदा, भाव संपदा, रूप शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया हैं। राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर पर मैं आप सभी का आहवान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प ले कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे । माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश - विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते है जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आबादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके है और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प ले कि अपने दैनिक कार्यो में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन: मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद !

नई दिल्ली

14 सितंबर 2022

(अमित शाह)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 18वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी केवल अनुवाद की भाषा नहीं है, यह जनमानस के हृदय की भाषा है इसलिए मूल कार्य हिंदी में ही हो, इसका प्रयास करना चाहिए।

राजभाषा हिंदी का विकास और प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए हम सब को मिलकर कोशिश करनी होगी। आज जरूरत इस बात की है कि हम हिंदी को इसके सरल रूप में अपना कर अपने सभी सरकारी और व्यक्तिगत कार्य हिंदी में करने को प्राथमिकता दें।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल, सभी रचनाकारों एवं पाठकों को बधाई देते हुए मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल साहित्यिक भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

पत्रिका की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(के. सुब्रमण्यम)
प्रधान महालेखाकार

संपादकीय

हमारी विभागीय पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" का नवीन 18वां अंक भी सुधि पाठकों को पूर्व अंकों की भाँति यथासमय प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह सम्पादकीय परिवार के सुप्रयासों के अतिरिक्त रचनाकारों के बहुमूल्य योगदान, कार्यालय कर्मियों के राजभाषा हिंदी के प्रति बढ़ते रुझान एवं पाठकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया के कारण संभव हो पाया है।

हिदीं हमारी राजभाषा है तथा यह समृद्ध होने के अतिरिक्त अधिकतर भू-भाग में लिखी, पढ़ी एवं बोली जाने वाली भाषा है। कार्यालय के सभी कार्मिको को अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों के निष्पादन में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने में प्रतिष्ठा एवं सम्मान की अनुभूति होनी चाहिए। पत्रिका के प्रकाशन से हम कार्यालयीन गतिविधियों से रूबरू होते हैं तथा हमारे सहकर्मियों को उनके विचार व्यक्त करने हेतु एक मंच भी प्राप्त होता है।

प्रस्तुत अंक में हमारे कार्यालय में गत छः माह में होने वाली गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की झलकियों के साथ - साथ कार्मिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर रचित लेखों, कहानियों एवं कविताओं इत्यादि का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं इस पत्रिका में योगदान देने वाले सेवारत एवं सेवानिवृत्त कार्यालय कर्मियों तथा अतिथि रचनाकारों का आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से पत्रिका इस स्तर तक पहुँच पायी है।

आशा है कि पाठकों को पत्रिका रूचिकर लगेगी एवं पूर्व की भाँति पाठकों का स्नेह 'लेखापरीक्षा अर्चना' को मिलता रहेगा। सम्पादकीय परिवार के प्रयास कितने सफल हैं, इसका निर्णय तो पाठकगण ही करेंगे। 'लेखापरीक्षा अर्चना' की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए पाठकों के बहुमूल्य सुझावों का स्वागत है।

वीरेन्द्र सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अ नु क्र म णि का

क्र.सं.	विवरण	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	भारतीय संस्कृति की संवाहक - हिंदी एक लम्बा सफर	लेख	श्री यादराम सिहं यादव	10
2.	घर	कविता	सुश्री प्रज्ञा पाठक	17
3.	वैदिक साहित्य में मानव संसाधन प्रबंधन के सूत्र	लेख	डॉ नवल किशोर सेठी	18
4.	स्त्री	कविता	सुश्री रश्मि राज	21
5.	जिंदगी की सीख	कविता	श्री ओम प्रकाश गुप्ता	22
6.	माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस	लेख	श्री राजीव भाटिया	23
7.	हिफाजत	कविता	श्री गुरू दयाल	27
8.	भारत माता की जय	कविता	श्रीमती लक्ष्मी खूंटेटा	29
9.	वर्तमान में महात्मा गाँधी के सामाजिक दर्शन की प्रासंगिकता	लेख	श्री शंकर लाल सीमावत	30
10.	बचपना	कविता	श्रीमती रीतिका मोहन	34
11.	सक्रिय रहें	संस्मरण	श्री देव शर्मा	42
12.	विश्व गुरूत्व एवं रोजगार हेतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली न्यायसंगत नहीं	लेख	श्री पदम चंद गाँधी	44
13.	सोशल मीडिया और भारतीय समाज	लेख	श्री दीपक कोहली	50
14.	आत्म निर्भरता	कहानी	सुश्री लवली शर्मा	51
15.	गजल	गजल	श्री रामानंद शर्मा	53
16.	टूटी चप्पल	कहानी	श्री लोकेन्द्र सिंह	55
17.	प्रतिशोध	कहानी	सुश्री रूचि गुप्ता	56
18.	मेरा श्राद्ध	कविता	श्री ओम प्रकाश गुप्ता	57
19.	लोग पत्थर के हुए हैं	कविता	श्री सुनील कुमार खूंटेटा	59
20.	कार्यालयीन गतिविधियां	प्रतिवेदन	श्री अरूण कुमार शर्मा	60
21.	पाठकों के अभिमत	प्रतिक्रिया	पाठकवृंद	62
22.	लेखापरीक्षा शब्दावली	शब्दावली	राजभाषा अनुभाग	66
23.	हम लड़के हिंदुस्तान के	कविता	श्री मदन लाल कोली	67

स्वत्व-त्याग (डिस्क्लेमर)- इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार है। इसमें निहित लेख, कविताएँ तथा विचार इत्यादि मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय इनसे सहमत हो।

भारतीय संस्कृति की संवाहक - हिन्दी एक लम्बा सफर

हिन्दी भाषा का उद्‌भव- हिन्दी का प्राचीनतम रूप संस्कृत है। इसका इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है, जिसका काल मुख्यतः 1500 ई.पू. से 500 ई.पू. माना जाता है। उस समय संस्कृत ही बोलचाल की एवं साहित्यिक भाषा थी। प्राचीन भारतीय आर्यों की भाषा संस्कृत थी और मध्यकालीन भारतीयों की भाषा पाली थी। पाली के अतिरिक्त प्राकृत व अपभ्रंश भी शामिल हुई। बौद्ध धर्म के उपदेश पाली भाषा में ही दिये गये थे। सम्राट अशोक के सभी बौद्ध शिलालेख पाली भाषा में ही थे। उन्होंने पाली को राष्ट्र भाषा बनाया था। पहली ई. से 500 ई. तक इसका रूप प्राकृत हो गया था। जैन साहित्य प्राकृत भाषा में लिखा गया है। आगे चलकर इन्हीं प्राकृतों से विभिन्न क्षेत्रीय अपभ्रंशों का विकास हुआ, जिसका काल लगभग 1000 ईसवीं तक का माना जाता है। इसके बाद से आधुनिक भाषा काल प्रारम्भ होता है और हिन्दी भाषा व्यवहार में आ गई। शौरसैनी-अपभ्रंश से हिन्दी का जन्म माना जाता है। शौरसैनी-शूरसेन प्रदेश की भाषा थी। इसकी राजधानी मथुरा नगरी थी। जिसके आस-पास का क्षेत्र भरतपुर, धौलपुर व करौली राज्य भी इसमें शामिल थे। शूरसेन राजा यदुवंशी थे, जो श्री कृष्ण के वंशज माने जाते हैं।

अंग्रेजी व उर्दू का प्रभाव- मुगलों की भाषा उर्दू थी। जिसकी लिपी फारसी थी जो कि कोर्ट-कचहरी की भाषा उर्दू रही थी। इसके बाद ब्रिटिश शासकों ने अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बना दिया। पं. मदन मोहन मालवीय व श्यामसुन्दर दास की शिकायत एवं मांग पर अंग्रेजों ने 18 अप्रैल, 1900 को एक आदेश से उत्तर प्रदेश की अदालतों में देवनागरी लिपि के उपयोग की छूट दे दी थी। यह हिन्दी की उर्दू व अंग्रेजी पर शुरूआती बड़ी जीत थी। शरफुद्दीन यज्दी ने 'जफरनामा' में हिन्दी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया था। मुगलकाल में भी हिन्दी अपना प्रभुत्व बनाये हुए थी। हिन्दी के बारे में एक बार अमीर खुसरों ने फारसी में लिखा था-"चू-मन तूती हिदम अररास्त-जेमन हिंदवी पुरसता नग्ज़ गोयम।" अर्थात् मैं हिंदुस्तान की तूती हूँ, अगर मुझे सच पूछते हो तो, हिन्दी में पूछे जिससे मैं अच्छी बातें बता सकूँ।" सन् 1526 से 1857 तक मुगलकाल में हिन्दी के प्रसिद्ध कवियों में रहीम, रसखान, मलिक, मुहम्मद जायसी, सूरदास सन्त शिरोमणि रविदास, कबीरदास, मीराबाई, तुलसीदास, बिहारी, संत घासीदास, घनानन्द व पीपा तथा नानक जैसे प्रसिद्ध भक्ति आन्दोलन के महान् सन्त कवि हुए हैं। जिन्होंने हिन्दी भाषा में विपुल साहित्य की रचना की थी। जिससे देश में हिन्दी प्रतिष्ठापित हुई है। संस्कार निर्माण हुए और हिन्दी हृदयांगम हुई। हिन्दी हमारी बोली, संवाद एवं लेखन की भाषा बनी । इस प्रकार हिन्दी हमारी मातृभाषा एवं जननी हुई, जिसे सुन-बोलकर हम पले-बढ़े युवा हुए हैं। इस भाषा ने भारत को गढ़ा है।

आजादी से पूर्व हमारे देश में भारतेन्दु हरिशचन्द्र जैसे पुरोधा, हिन्दी के कवि हुए, जिन्होंने खुद को हिन्दी के विकास को समर्पित किया था। वह वास्तव में देश की एक भाषा बनाने के पक्षधर थे। उन्हें खड़ी बोली का जनक भी कहा जाता है। हिन्दी साहित्य के एक कालखंड को 'भारतेन्दु युग' भी कहा जाता हैं। वाल्मीकि ने कहा था कि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होती है। व्यापक अर्थों में इसका अर्थ यह होता है कि अपनी भाषा में संवाद-स्वर्ग के समान ही है। अपनी बोलचाल की भाषा में हम गौरान्वित महसूस करते हैं। तत्कालीन अंग्रेजी शासनकाल में जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी (निराला), रामचन्द शुक्ल, बालमुकुन्द गुप्ता, पं. श्रद्धाराम फुल्लौरी, सुमित्रानंदन पंत, सुभाद्राकुमारी चैहान, मैथिलीशरण गुप्त एवं महाकवि प्रदीप, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, गुलाबराय, भगवती चरण शर्मा, ईसा अल्लाह खांन, मुंशी प्रेमचन्द, डॉ रांगेय राघव, फणीश्वरनाथ रेणु, हरिशंकर परसाई, गोपालदास नीरज तथा रामधारीसिंह दिनकर तथा हरिवंशराय बच्चन तथा माखनलाल चतुर्वेदी जैसे अनेकों साहित्यकार एवं कवियों ने हिन्दी भाषा में एक विपुल साहित्य की रचना की है। जो कि पूरे देश के स्कूल-कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में पढ़ायी जाती है, जिससे नयी पीढ़ी में संस्कार निर्माण हुए। भारत जैसा आज है उसके निर्माण में प्राचीन, मध्यकाल तथा वर्तमान युग के साहित्यकारों एवं कवियों का बड़ा भारी योगदान है। जिनकी शिक्षा पाकर एवं प्रेरित होकर छात्र शिक्षा के क्षेत्र में देश-विदेशों में नित नये-नये कीर्तमान गढ़ रहे हैं। हमारे राष्ट्रगान "जन-गन-मन" को विदेशी भी सीखकर गाने लगे हैं। अप्रवासी भारतीय भी यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति को दुनिया के सैंकड़ों देशों में फैला रहे हैं।

यायावर राहुल सांकृत्यान तिब्बत, चीन एवं रूस से आज दो सदी पूर्व विलुप्त बौद्ध साहित्य को खच्चरों पर लादकर भारत लाये थे तथा जिसके बाद में उन्होंने अनेक ग्रंथों जैसे मंझिम निकाय, दिघ निकाय तथा संयुक्त निकाय का बहुत परिश्रम करके हिन्दी में अनुवाद कर भारत की खोई हुई सांस्कृतिक धरोहर को पुर्नजीवित कर भारतीय जनता को उपलब्ध कराया। इसके अलावा उन्होंने वैदिक आर्य, दर्शन एवं दिग्दर्शन, तुम्हारी क्षय, वोल्गा से गंगा तक इत्यादि पुस्तकें लिखी। वह 32 भाषाओं के जानकार तथा लगभग डेढ़ सौ पुस्तकों के लेखक थे। हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रांगेय राघव ने विदेशी अंग्रेजी भाषा के प्रसिद्ध कवि शेक्सपीयर के सभी 10 अंग्रेजी नाटकों का हिन्दी अनुवाद किया था तथा अनेकों पुस्तकों का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद कर आमजन को पठन-पाठन हेतु उपलब्ध कराया था।

उस तरह इन महारथियों द्वारा अंग्रेजी व बौद्ध साहित्य का हिन्दी में अनुवाद कर भारतीयों को सांस्कृतिक विरासत को समझने हेतु उपलब्ध कराया था। उन्होंने हिन्दी भाषा की बड़ी सेवा की है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के शब्दों में "निज भाषा उन्नति अहें, सब उन्नति को मूल" रहा है। इसी तरह राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों में कितनी सार्थकता है।

"है भव्य भारतवर्ष ही हमारी मातृभूमि हरी भरी।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपी है नागरी।।"

इसी तरह आधुनिक रचनाकारों में देवकी नन्दन खत्री, गुलशनंदा, नरेन्द्र कोहली, कर्नल दलजीत, मनु शर्मा तथा फ्रिक्सन एवं जासूसी सामाजिक उपन्यासों, श्री कृष्णा एवं रामायण आदि का नाम मुख्यतः लिया जाता है। उनके लेखन पर झील के उस पार, कटीपला जैसी फिल्म बनी है।

आज पूरे विश्व में ज्ञान गंगा को सहेजती, कबीर की उक्ति, "भाषा बहता नीर", को जीवन्त करती हिन्दी अपने परम्परागत पुरातन मार्ग पर चलने के साथ-साथ अन्धुनातन मार्गों को अपनाती, अनुकूल बनाती, बढ़ती चली जा रही है। खड़ी बोली हिन्दी के प्रणेता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सदियों पूर्व कहा था कि अनेकों प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार का ज्ञान सभी देशों से अवश्य लेना चाहिए, परन्तु उनका प्रचार, अपनी भाषा में ही करना चाहिए। हिन्दी हमारी मातृभाषा सिरमौर है, रसीली है, मीठी है तथा संवेदना से भरी हुयी है मनोरंजक एवं गंभीर है।

हिन्दी राजभाषा बनी- देश की आजादी के बाद 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा स्वीकार कर अंगीकार किया था। संविधान के अनुच्छेद 343 में कहा गया है कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपी देवनागरी होगी। तभी से इस दिवस को हिन्दी दिवस के रूप में पूरे राष्ट्र में मनाया जाता है। अपने देश के इतिहास, साहित्य, अध्यात्म, जीवन दर्शन आदि को समझने में भी भाषा सेतु का काम करती है। नई पीढ़ी को इस ओर आकर्षित करने की आवश्यकता है। उन्हें हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार एवं कवियों की काव्य कृतियों से परीचित करा दिया जाए तो वे हिन्दी के प्रति अवश्य समर्पित हो जायेंगे, क्योंकि आगे का काम स्वयं हिन्दी की मिठास ही कर देगी।

संविधान सभा में हिन्दी को राजभाषा का गौरव दिलवाने वाले, पुरुषोत्तम दास टंडन, सेठ गोविन्ददास और नरहरि विष्णु कामठ साहब थे। वर्तमान में हिन्दी दिवस पर उद्घाटनकर्ता मंत्री महोदय भी उनका नाम नहीं जानते होंगे। 75 वर्ष की आजादी के बाद भी अपनी भाषा नहीं सीखना एवं उसकी उपेक्षा करना राष्ट्र के साथ एक विश्वासघात ही है। प्रशासनिक क्षेत्र में हिन्दी प्रयोग को अनिवार्य करने के लिए प्रदेश में राजस्थान भाषा अधिनियम वर्ष 1956 तथा राजस्थान राज भाषा (अनुपूरक उपबंध) अधिनियम 1970 में लागू किया गया है। राज्य में वर्ष 1965 में भाषा निदेशालय की स्थापना की गयी है। तभी से राजस्थान का भाषा एवं पुस्तकालय विभाग हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने का निरन्तर कार्य कर रहा है।

हिन्दी के विकास की बात करें तो, हिन्दी हमारी राजभाषा है। इसमें वह ताकत है कि संस्कृत की सम्पन्न एवं समृद्ध विरासत इसके पास है। हिंदी संवेदनाओं को समेटना जानती है, जो इसकी खास बात है। हिन्दी की बोलियाँ इसकी अंग बनती गयी। इसमें एक से बढ़कर एक उत्कृष्ट कोटि की रचना हुई है। विदेशों में भी हिन्दी का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। लिहाजा अब

वक्त आ गया है कि हिन्दी को राजभाषा की तरह अधिकारिक रूप से राष्ट्रभाषा घोषित कर देना चाहिए। वरना एक दिन वह अपने आप अघोषित राष्ट्रभाषा बन जाएगी। हिन्दी हमारे देश को एक सम्पूर्ण सूत्र में जोड़ती है। जिस गति से हिन्दी आगे बढ़ रही है, उससे लगता है कि उसे किसी सहारे की जरूरत नहीं है। आज भारत के कोने-कोने में हिन्दी जानने समझने वालों की कमी नहीं है। एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त के व्यक्तियों को जोड़ने की अभिव्यक्ति का माध्यम हिन्दी ही बनती है। रेल, बस, हवाई जहाजों, सभा, सिनेमा, सेमीनारों, सामाजिक व धार्मिक उत्सवों आदि में भी संवाद सम्पूर्ण परिचय की भाषा हिन्दी होती है।

फिल्मों द्वारा हिन्दी को बढ़ावा- हिन्दी फिल्मी गीत संस्कारों का निर्वाह करते हैं। इन गीतों की, समय को परास्त करने वाली ताकत इनमें निहित संस्कार के कारण हैं। हिन्दी फिल्मी गीत सांस्कृतिक अस्मिता के पोषक बन जाते हैं, जो सभी सरहदों को पार कर जाते हैं। मनुष्य की भाषा पर वातावरण का बड़ा प्रभाव होता है। वह जो सुनता है, वही सीखने का प्रयास रहता है। लम्बे समय तक देवानन्द के सहयोगी रहे अमित खन्ना ने टीना मुनीम अम्बानी, अभिनीत फिल्म 'मनपसंद' में शुद्ध हिन्दी में गीत लिखे थे, जो अत्यन्त लोकप्रिय हुए थे, जैसे "चारू चंद्र की चंचल किरणें" और "सुमन सुधा रजनी गंधा" इत्यादि। एक दक्षिण भारत के रिक्शा चालक भी हिन्दी फिल्मों को देखकर हिन्दी बोलना, समझना सीख जाते हैं किन्तु वे बोलते अपनी ही भाषाएँ हैं। यथार्थ जीवन में युवा हसरत जयपुरी ने अपनी प्रेमिका को पत्र लिखा कि "मेरा प्रेम पत्र पढ़कर कहीं तुम नाराज नहीं होना कि यह मेरी जिंदगी है कि ये मेरी बंदगी है।" बाद में काफी संघर्ष के बाद उनका विवाह हो गया। राजकपूर ने 'संगम' फिल्म में इस गीत का इस्तेमाल किया। प्रायः युवा प्रेमी फिल्मी गीतों के माध्यम से अपना प्रेम अभिव्यक्त करते हैं। यह हिन्दी भाषा का प्रभाव ही है।

फिल्मी गीत आम आदमी के जीवन में हमसफर है, हमसाया है। सुर नहीं सधे तब भी इन्हें गाया जाता है। कभी किसी का जीवन सम्पूर्ण नहीं होता और सम्पूर्णता के लिए प्रयास करते रहना ही जीवन की सार्थकता है। सारे उत्सवों के लिए फिल्मी गीत रचे गये हैं। होली, दीवाली, ईद, क्रिसमस आदि सभी उत्सवों पर गाये जाने वाले फिल्मी गीत हमारे जीवन का एक हिस्सा हैं। बिना गीतों के उत्सव फीके लगते हैं। हिन्दी से भारत की विविधता में एकता का भाव भी इस क्षेत्र में कायम है। हिन्दी अब विश्व की दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनती जा रही है। एक सर्वे के अनुसार 90 करोड़ से ज्यादा लोग हिन्दी बोलते हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिन्दी सिनेमा का बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इससे हिन्दी सिनेमा की वैश्विक पहुँच बन चुकी है।

दूरदर्शन एवं सोशल एवं प्रिन्ट मीडिया का हिन्दी को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण योगदान है। दूरदर्शन पर दिखाए गए दो हिन्दी धारावाहिक 'रामायण' एवं 'महाभारत' की भारत में ही नहीं विदेशों में भी बड़ी मान्यता है एवं देखने की आज भी इच्छा करती है। इससे लोगों की श्रद्धा के

साथ हिन्दी की मान्यता तथा प्रचार-प्रसार बढ़ा है। एक वक्त था जब दूरदर्शन पर दिखाई जाने वाली 'रामायण' के वक्त चलती संसद की कार्यवाही भी रूक जाती थी। हमारे जन प्रतिनिधि रामायण के हिन्दी के संवादों में खो जाते थे, और बहुत रुचि लेते थे। यह सभी लोगों के मन में भाती थी। रामायण में भारतीयों की बहुत मान्यता है। इसे हिन्दी के गौरव ग्रन्थ के रूप में देखा जाता है। यह विदेशों में भी अपनी अहमियत रखता है। इन धारावाहिकों की वजह से हिन्दी को बहुत सम्मान की भावना से देखते हैं। इसी तरह भारतीय क्रिकेट, हॉकी एवं फुटबाल के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मैचों के प्रसारण के वक्त छात्र, युवा, कर्मचारी, खिलाड़ी तथा अन्य सभी रूचि रखने वालों की भीड़ इलेक्ट्रोनिक्स व पान वालों की दुकान पर भीड़ लग जाती थी और रास्ता भी जाम होने की नौबत आ जाती थी। इस तरह भारत में खेलों के प्रति, हद से ज्यादा देखने एवं हूटिंग कर आनन्दित होने का शौक है, जिसकी कमेन्ट्री हिन्दी भाषा में होती है। इससे हिन्दी के "रामायण व शक्तिमान" जैसे धारावाहिकों के डायलॉग लोगों की जुबान पर चढ़े हुए हैं और हिन्दी का स्वमेव ही प्रचार-प्रसार हो रहा है।

इसके अलावा देशी विदेशी टीवी चैनल्स पर अनेकों ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक तथा मनोरंजन, ज्ञान एवं समाचारों (सूचना) के अनेक हिन्दी के चैनल्स रात-दिन हिन्दी में अपना-अपना कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। जिसे देश के सभी वर्गों जैसे, गृहणी, मजदूर, किसान, व्यापारी, दिहाड़ी वाले, नौकरी पेशा, छात्र एवं अन्य सभी रूचि रखने वाले लाखों-करोड़ों की संख्या में लोग देखते हैं और इससे हिंदी को बढ़ावा मिलता जा रहा है। आम लोगों का शब्द कोष भी संवाद-विषयवस्तु को सुन-सुनकर सम्पन्न होता जा रहा है। इसके अलावा अनेक टीवी सीरियल जैसे-कौन बनेगा करोड़पति, इंडियन आइडॉल, डांस इंडिया डांस, सारे-गामा पा, कपिल शर्मा शो आदि भारतीय जनता को संवाद, मनोरंजन एवं शिक्षा एवं ज्ञान भी प्रदान कर हिन्दी को बढ़ावा दे रहे हैं। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र. दिवस समारोह भी हिन्दी को स्वयंमेव ही प्रचार-प्रसार करते हैं। लोग दिल लगाकर इनका प्रसारण देखते हैं। कहीं ना कहीं जनता की भी इसमें भागीदारी होती है। देश के प्रिन्ट मीडिया सभी प्रकार के समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ एवं जर्नल आदि और प्रतिदिन हजारों की संख्या के अखबार की करोड़ों प्रतियाँ छापकर जनता तक पहुँचाते हैं, जो कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार का बहुत बड़ा माध्यम है।

सोशल मीडिया तथा ऑडियो विजुअल मीडिया के द्वारा समाचारों के साथ-साथ शहरी घटनाओं, वार्ताओं, नौटंकी, नाटक, चौपाल, गीता भागवत तथा रामायण आदि शहरों, ग्रामीण एवं कस्बाई क्षेत्रों में लोगों द्वारा काफी देखे सुने जाते हैं। इससे हिन्दी भाषा को ही प्रोत्साहन मिलता है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस परम्परा से विषयवस्तु आगे बढ़ती जाने से हिन्दी की सांस्कृतिक विरासत सम्पन्न होती जा रही हैं। देश-विदेशों में भारत देश के साहित्यकार, लेखक, कवियों तथा नाटककारों के माध्यम से हिन्दी के पठन-पाठन को बढ़ावा व प्रोत्साहन मिलता रहता है।

वर्तमान में देश से निकलने वाले हिन्दी के 942 दैनिक अखबारों के अलावा साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, छःमाही व वार्षिक अंक सारे देश में जाते हैं। इस प्रकार हिन्दी की गति आगे बढ़ती ही जा रही है। भारत की राजभाषा एवं भावी राष्ट्रभाषा हिन्दी ही है जो सरकारी कार्यों एवं आमजनता की जरूरतों को पूरा कर रही है। धार्मिक, आध्यात्मक गुरु, साधु सन्त, महात्मा आदि भी अपने प्रवचन एवं संदेश हिन्दी में देते हैं। इससे हिन्दी के प्रचार-प्रसार को अहम योगदान मिलता है। लोग धर्म गुरुओं के संदेशों को अक्षरतः याद कर लेते हैं।

आजादी की लड़ाई में हिन्दी का योगदान, हमारे देश की आजादी का संग्राम, हिन्दी भाषा के माध्यम से ही लड़ा गया था। वह चाहे अखबारों व पत्रिकाओं व प्रकाशित गद्य लेख हों, कविता या भक्तिगीत रचनाएँ हों। हिन्दी ही इन सबका प्रमुख माध्यम रही हैं। यही कारण है कि आज भी हिन्दी, सम्पूर्ण भारत देश की सम्मानीय भाषा हैं। यह भारत में रहने वाले सभी धर्मों, वर्गों, जातियों, सम्प्रदायों पंथों की सर्वमान्य भाषा है। हिन्दी के अनेक प्रसिद्ध रचनाकारों ने कालजयी कृतियों का सृजन किया है। हिन्दी ने विश्व साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। मौज़ूदा दौर में हिन्दी अब एक भाषा ही नहीं, बल्कि गौरवमयी सांस्कृतिक परम्परा और सामाजिक प्रतीक बन चुकी है, जिसका लोहा सारा विश्व मानता है। हिन्दी में गंगा का एवं सागर के दोनों ही गुण हैं, जो इसे अन्य भाषाओं से अलग एवं खास बना देता है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी- हिन्दी ने अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार दोनों में ही अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। हिन्दी में विश्व भाषा बनने की शक्ति है। हिन्दी की देवनागरी लिपि विश्व की सर्वोत्तम वैज्ञानिक लिपि है। हिन्दी का शब्द भंडार अपरिमित है और यही नहीं, हिंदी देशी विदेशी भाषाओं और बोलियों को सहज आत्मसात कर लेती है।

विदेशों में विशेषकर सोवियत संघ में सर्वाधिक हिन्दी सेवी आज भी हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में इंग्लैण्ड की प्रमुख भूमिका रही है। आज हिन्दी विश्व के लगभग सभी प्रमुख देशों, अमेरिका, रूस, चीन, जापान, फ्रांस, इंग्लैण्ड, कनाड़ा, इटली, ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका, बर्मा, मॉरिशस, फिजी, सूरी नाम, नेपाल, थाईलैण्ड, बंगलादेश, पाकिस्तान आदि 140 देशों में हिन्दी अपनी उपस्थिति से सुगन्ध फैला रही है। बी.बी.सी. लंदन और अन्तर्राष्ट्रीय लंदन दूरदर्शन की भूमिका भी सराहनीय है। यही नहीं, अलग-अलग देशों उनके आकाशवाणी केन्द्रों और दूरदर्शन चैनल्स पर विशेष हिन्दी पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। आज विश्व के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों, कॉलेजों एवं स्कूलों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। अमेरिका के ही 33 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन हो रहा है। जर्मनी में 14 विश्वविद्यालय और शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी पढ़ाई जाती है। इस प्रकार हिन्दी निरन्तर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी धाक जमाती चली जा रही है। विश्व बाजार में भारत की महाभूमिका ने उसे और भी महत्त्वपूर्ण बना दिया है। हाल ही में संयुक्त राष्ट्रसंघ की साधारण सभा ने हिन्दी को अपनी मान्यता प्रदान कर दी है। इससे यू.एन. की 6 भाषाओं में हिन्दी भी

एक प्रमुख संवाद की भाषा बन चुकी है। अब वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के पद पर प्रतिष्ठित होगी। भारत एवं मॉरिशस सरकार के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिन्दी सचिवालय का स्थायी कार्यालय मॉरिशस में स्थापित किया गया है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसलिए एक कहावत है कि कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बदले बानी। लगभग डेढ़ करोड़ भारतीय मूल के लोग विश्व के 140 देशों में बिखरे हुए हैं, जिसमें आधे से अधिक हिन्दी भाषी है। भारतीय मूल के अप्रवासी भारतीय आपस में हिन्दी में वार्तालाप करते हैं। अपने तीज त्योहार मनाते हैं। हिन्दी में भारतीय संविधान, गीता, रामायण सुनते पढ़ते हैं। विश्व के अनेक देशों में हिन्दू मंदिरों, जैन मंदिरों, बौद्ध मंदिरों-मठों आदि का निर्माण हुआ है एवं भारतीय सन्तों महापुरुषों ने विश्व व्यापी अमन शान्ति का सन्देश दिया है। एक गीत है- मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिशतानी, सिर पर लाल टेपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी। इसे विदेशों में सुनकर हर भारतीय गदगद हो जाता है। सन् 1949 से आज तक विश्व में हिन्दी का प्रसार देखकर, ऐसा लगता है जैसे माली को लगाए पेड़ों के आम खाने का समय आ गया है।

हिन्दी की लोकप्रियता में टीवी का योगदान- 1982 में प्रथम बार एशियाई खेलों का प्रसारण भारत में टीवी पर प्रारम्भ हुआ था, जो श्वेत श्याम टीवी से तरक्की करके रंगीन पर्दा पर आ गया। इसी के साथ हिन्दी भी लोकप्रियता के रथ पर चढ़ चली। दूरदर्शन के निजी उपग्रहों के चैनलों में कदम रखा तो, सभी प्रकार के सामाजिक पारिवारिक, ऐतिहासिक, धार्मिक व मनोरंजन के विषयों पर अनेक कार्यक्रम जैसे समाचार के अलावा, प्रतियोगिता, फिल्मी गीत, फिल्मों के प्रसारणों से आम जनता की रुचि और उनके प्रसारण से हिन्दी के प्रचार-प्रसार को पंख ही लग गये हैं। हिन्दी, हिंदुस्तान की घड़कन है, इसे सारी दुनिया मानती है। वर्तमान में टी.वी. पर घरेलू दर्शकों की संख्या 50 करोड़ पहुँच चुकी है। इन सबसे हिन्दी भाषा को प्रोत्साहन मिला है। इसके अलावा यू-ट्यूब, वाट्सअप, विडियो, मेल, फेस बुक व इंस्टाग्राम आदि विभिन्न प्लेटफार्म पर कन्टेन्ट के आदान-प्रदान करने से हिन्दी का प्रसार-प्रसार काफी बढ़ा है।

वाणिज्य एवं व्यापार- उदारीकरण के इस दौर में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को भारत में अपने प्रोडक्ट की बिक्री का रास्ता खोल देने से, अपने उत्पादों को देश के कोने-कोने में पहुंचाने के लिए यहाँ की राजभाषा तथा स्थानीय भाषाओं में प्रचार करने की नीति बनायी है। इस रणनीति का परिणाम यह हुआ कि विज्ञापनों में जहाँ अंग्रेजी का प्रचलन था, अब वहाँ खुलकर हिन्दी का और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग होने लगा है। सारी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने विज्ञापन हमारी हिन्दी व सहयोगी भाषाओं में देने लगी है। भाषा के लिहाज से यह बदलाव अत्यंत शुभ और स्वागत योग्य है।

हिंदी में शर्म क्यों- अभी भी हमारी उच्च कार्य पालिका तथा न्यायपालिका के सभी कार्य अंग्रेजी में हो रहे हैं। कार्यपालिकाओं के आदेश तथा परिपत्र एवं न्यायालयों के निर्णय भी अंग्रेजी में होते

हैं जो आम संबंधित नागरिकों की समझ से परे होते हैं। स्वाधीनता के 75 वर्ष बीत जाने के बावजूद भारत, भाषाई गुलामी की जंजीरों से स्वयं को बाहर नहीं निकाल सका है। आखिर इनकी भाषा आम लोगों की हिन्दी भाषा में समझने वाली होनी चाहिए। "अंग्रेजी पर गर्व क्यों, क्यों हिन्दी पर शर्म, सोचो इसके मायने, सोचो इसका मर्म।"

यादराम सिंह यादव

अतिथि रचनाकार

"मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।" - विनोबा भावे।

घर

जब से घर से निकली हूँ
मन तलाश ए घर में रहा

एक सफर है मेरे अंदर कहीं
मैं किसी से अनजाने सफर में रहा

गुफ्तगु करती रही रात भर खामोशियाँ
दिल मेरा इंतजार ए सहर में रहा

अनंत की तलाश रही मुझे उम्र भर
उम्र भर मैं बस सबर में रहा

मौत आएगी तो तोड़ देगी ये भ्रम भी
संजो कर जो सपने किसी अगर मगर में रहा

प्रज्ञा पाठक

अतिथि रचनाकार

वैदिक साहित्य में मानव संसाधन प्रबन्धन के सूत्र

मानव संसाधन प्रबन्धन का अर्थ व परिभाषाः-

मानव संसाधन प्रबन्धन का अर्थ है कर्मचारी को पाना व उन्हें बनाये रखना। विद्वानों के अनुसार मानव संसाधन प्रबंधन की परिभाषाएँ निम्न है-

"Human resource or manpower effectively describes the process of planning and directing the application, development and utilization of human resources in employment."

- Dale Yoder

"HRM is the part of management process which is primarily concerned with the human constituents of an organization."

- E.F.L. Brech.

एनसाइक्लोपिडिया ऑफ़ मेनेजमेन्ट के अनुसार "मानव संसाधन प्रबंधन को मानव शक्ति की भर्ती, उपयोग एवं विकास के दृष्टिकोण से सर्व-सक्षम नियोजित, क्रियात्मक एवं पुनर्मूल्यांकन के रूप में परिभाषित किया जाता है। "

मानव संसाधन प्रबंध एक संघर्ष है जो अनियमितताओं के विरोध में सदा सजग रहता है और व्यक्ति या समाज के संरक्षण में रहकर उन्हें बिखरने एवं विकारों से बचायें रखता है। इस कार्य में लगे रहने के कारण हमेशा ही बाहरी व भीतरी आघातों को सहना पड़ता है। प्रबंधन से जीवन व्यवस्थित होता है और जैसे-जैसे जीवन व्यवस्थित होता जाता है, वह उत्तरोत्तर अपने को अधिक आत्म नियंत्रित करने के लिए नई-नई व्यवस्थाओं में बंधता जाता है।

कौटिल्य ने भी प्रबन्धन के विषय में कहा है-

व्यवस्थितः आर्यमर्यादः कृतवर्णाश्रमस्थितिः । भया हि रक्षितो लोकः प्रसीदति न सीदति ।।

अर्थात जो लोक आर्य मर्यादाओं में व्यवस्थित है, वर्ण, धर्म व आश्रम धर्म का पालन करता है तथा वेदों से रक्षित है वह सदा प्रसन्न रहता है। प्रकृति स्वयं व्यवस्थित है। प्रकृति में जो भी संभूत है, सभी एक प्रकार की व्यवस्था में रहते हैं। जीव जन्तु व प्रकृति व्यवस्थित मालूम पड़ते है। व्यवस्था के अन्तर्गत रहना जीवमात्र का स्वाभाविक गुण है और मानव तो सभी जीवों में अत्यधिक विकसित है।

साधारणतः हम देखते है कि एक मुहल्ले का या एक गांव का कुत्ता शायद ही कभी दूसरे मुहल्ले या गांव में जाता हो। यदि वह ऐसा करता है तो उसे भयानक विरोध का सामना करना पड़ता है। यह व्यवस्था ही तो है। एक जोड़ा पंछी घोंसला बनाते है तो शायद ही दूसरा पंछी उस घोंसले में प्रवेश कर पाता है। यदि वह ऐसा साहस करता है तो उसे अपने इस

व्यवस्था भंग का फल भोगना पड़ता है। एक पंछी के परित्यक्त घोंसले का प्रयोग दूसरा पंछी नहीं करता। एक वन का शेर दूसरे वन में नहीं जाता और यदि जाता है तो युद्ध जैसा भयानक परिणाम होता है। हां, आपात काल में धर्म का पालन होता है किन्तु सामान्य अवस्था में ऐसी छूट नहीं दी जाती। एक जंगल में आग लग जाये या उत्पात खड़ा हो जाए तो शेर एक वन से दूसरे वन में आश्रय ग्रहण कर सकता है। जीव निरीक्षकों का भी यही मत है।

पशु एवं पक्षी व्यवस्था का पालन धर्मशास्त्र व कानून पढ़कर या उपदेश सुनकर नहीं करते। उन के स्वभाव में व्यवस्था पालन का तत्व प्रकृति भर देती है, क्योंकि वह स्वयं व्यवस्था के भीतर रहकर व्यवस्थित तरीके से कार्य करती है। उसे विकार स्वीकार नहीं है। आम के वृक्ष से अमरूद कभी नहीं फलते, कभी दो चार घंटे देर से सूर्योदय होते किसी ने नहीं देखा, कभी भी पूरे महीने पूर्ण चन्द्र पृथ्वी पर किसी ने नहीं देखा... ये सारी व्यवस्थाएं अपने आप में गढ़ी हुई हैं, इनमें जरा भी दरार पड़ते ही उस दरार को ठीक करने में प्रकृति अपने समस्त यंत्रों को लगा देती है।

मानव संचेतन प्राणी है और कुछ तो अपनी अन्त: प्रेरणा से व्यवस्था प्रिय है और कुछ आवश्यकता तथा अनुभव के कारण अपने को स्व-संस्थापित व्यवस्थाओं में बांधता है। एक व्यक्ति जब समूह में परिणत होता है तब निश्चय ही उसे अपने को व्यवस्था के भीतर लाना पड़ता है। व्यवस्था के इसी विकास से आज समाज या राष्ट्र का विकसित रूप निर्मित हुआ है। यह विकास का क्रम युगों को पार कर और अनेक वातावरणों के भीतर से गुजरता हुआ वहां तक पहुंचा जहां इतिहास में इसे आश्रय मिला।

वेदिक काल में अनेक रूप में अग्नि का प्रबन्धन पुरोहितों के द्वारा बताया गया है-

"अग्निभीळे पुरोहिंत यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम्" २

देवता एवं मनुष्यों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए पुरोहित, ऋत्विज एवं होता, ये तीन यज्ञ के प्रमुख बनाए गए तथा अग्नि को देवदूत बनाया गया- **"अग्निर्वै देवानां मुखम्"३** । इस प्रकार हम देखते हैं कि बिखरे हुए आय एक समूह में परिणत होते हैं और अग्नि केन्द्र बनती है पुरोहित नेता बन कर सामने आता है । व्यवस्थित जीवन का अर्थ ही व्यवस्थाओं में कसा हुआ जीवन होता है। यदि यज्ञ को हम केवल विधिकर्म, पुण्य और स्वर्ग का देने वाला मान ले तो यह भी मानना पड़ेगा कि आहुतियों के बल पर सब कुछ मिल जायेगा। यज्ञ काल्पनिक कामधेनु नहीं है। धरती कामधेनु है। विद्या कामधेनु है, बुद्धि कामधेनु है। साहस, आशा, कर्म, योग, प्रेम और बन्धुत्व, सद्भावना, सदाचार ये सब कामधेनु ही तो है।

संगठित और व्यवस्थित समाज से ही हम संगठित और व्यवस्थित जीवन प्राप्त कर सकते हैं । अप्रबन्धित मानव उन विकासात्मक उत्तरदायित्वों से सर्वथा मुक्त रहता है जो उसे व्यवस्थित करते हैं और ऊपर उठाते हैं। वे उत्तरदायित्व क्या है- व्यवस्था ही तो है। कर्तव्याकर्तव्य के बंधनों में बांधने का नाम ही "व्यवस्था" है।

एक ऋषि जब स्मृतिदोष में होता था तब वह अपने कार्य को जहाँ पर छोड़ जाता था, आने वाला ऋषि उसे वहाँ से आगे बढ़ाने लगता था। लक्ष्य पहले ही ठीक कर लिया होगा ऐसा जान पड़ता है। यदि ऐसी बात नहीं होती तो रास्ता बदल जाता और आर्य कहीं से कहीं पहुँचकर नष्ट हो जाते। यह प्रमाणों और विद्वानों के मत से सिद्ध हो चुका है कि अपनी आदिम अवस्था में आर्यों को दो वर मिले- यज्ञ और ऋषि । इसी क्रम में पंचमहायज्ञ का विधान मिलता है।[4] आरम्भिक अवस्था में जब आर्य समूह के रूप में थे तब ही एक ऐसा केन्द्र था जिसने उन्हें संगठित किया। यह संगठन मानवता का स्तर था। सभी प्रयास करते थे, अर्जन करते थे, मिलकर खाते पहनते थे। कोई धनी नहीं था, कोई गरीब नहीं था। नेता के रूप में तत्वदर्शी ऋषि थे जो अपने प्रवचनों से उपर उठाने का प्रयास करते थे।

अब दूसरी अवस्था आई जब परिवार, समाज कुल आदि का प्रबंधन अस्तित्व में आया। ज्ञान विज्ञान का विकास हुआ, उद्योग व्यापार का फैलाव हुआ, वर्ण व्यवस्था का उदय हुआ। श्री कृष्ण ने स्वयं भगवद् गीता में वर्णों के विषय में कहा है-

"चातुर्वण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागद्या:"

इन चारों वर्णों के सम्यक प्रबन्धन के लिए पुनः ब्रहमचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास आदि चार आश्रमों का निर्माण किया गया जिसका आधार आयु को बनाया गया। जीवेत शरद: शतम् के अनुसार मानवमात्र का शतवर्ष जीवी बनाने के लिए, रोगादि से मुक्ति के लिए 16 संस्कारों का विधान किया गया। भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा जीवन प्रबंध को प्रदर्शित करती है। ऋगवेद के पुरुष सुक्त में विराट् पुरूष से चारो वर्णों की उत्पत्ति बताई गई है जो हमारे प्राचीन ऋषियों द्वारा मानव जीवन को व्यवस्थित करने का या यूं कहे की मानव संसाधनों को व्यवस्थित करने का एक सुन्दर उपाय था ।

"ब्राहम्णोऽस्यमुखमासीत् बाहूराजन्यःकृतः ।[6]
उरुतदस्य यद्वैध्य पादाभ्याम् शूद्रोऽजायत्।।"

इस प्रकार वैदिक साहित्य व वैदिक उत्तर कालीन साहित्य से लेकर वर्तमान समय में भी मानव जीवन को उन्नत व श्रेष्ठ बनाने के लिए मानव संसाधन प्रबन्धन किये जा रहे हैं। यह विषय आज के परिप्रेक्ष्य में नूतन प्रतीत हो सकता है लेकिन इसका मूल वैदिक वाङ्मय में निहित है।

संदर्भ-

1. विद्यासमुद्धा (कौटिल्यकृत) 2. ऋगवेद- 1/1/11 3. ऐतरेयब्राहमण- 7/16 4. यजुर्वेद - 3/45, अथर्ववेद- 19/72/2, 19/45 5. भगवद्गीता- 4/13 6. ऋगवेद - 10/90/12

डॉ॰ नवल किशोर सेठी
प्राचार्य महिला महाविद्यालय बाँदीकुई

स्त्री

कभी फूल तो कभी कली कही गई,
मगर सींचने की जगह रौंदी ही गई ।

कभी जननी तो कभी जन्मदात्री कही गई,
मगर जन्म लेने से पहले ही मार दी गई ।

कभी सहचरी तो कभी अर्द्धांगिनी कही गई,
मगर हक़ के आधे हिस्से से भी रोक दी गई ।

कभी सुन्दरता की तो कभी खूबसूरती की देवी कही गई,
मगर मजबूरी में इसकी ही दुकानदारी बना दी गई ।

कभी ममता की तो कभी प्यार की मूरत कही गई,
मगर प्रेम करने पर ही समाज की गुनाहगार बना दी गई ।

कभी अपने घर की तो कभी उसके घर की इज्जत कही गई,
मगर खुद को रत्ती भर इज्जत नसीब नहीं हुई ।

कहने को तो कभी देवी तो कभी पूज़नीया भी कही गई,
मगर इंसान की भी जगह उसे मुनासिब ना हुई ।

रश्मि राज
कनिष्ठ अनुवादक

<u>जिंदगी की सीख</u>

जिंदगी ने सिखाया है हमें कि
अपनो को हृदय में बसाने को,

अक्सर खामोश ही रहा करो ,

किसी की भी बात को,

दिल पर ना लिया करो।

पर गलत जगह मौन रहे तो,

गलतियों का जीतना निश्चित है।

आपकी जिद्द एक मनोवृति है,

सब उलझनों की यह जड़ है,

मात्र जिद्द ही मात्र वह गांठ है

रिश्तों को तोड़ने की मात्र यही,

तो एक मात्र मजबूत जड़ है ।

आपके कर्मों का परिणाम ही

आपके इस जीवन की यात्रा है ,

जीवन के सब सुख-दुःखों के,

मात्र आप स्वयं ही जिम्मेदार हैं ।

इस सत्य को स्वीकार कर,

मन में शांति स्थापित कर लो,

मन में शांति स्थापित कर लो ।

ओम प्रकाश गुप्ता "ओ३म्"
(से.नि.) लेखाधिकारी,
राजस्थान सरकार

माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस

माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस (Microsoft Office) या केवल ऑफिस (Office), माइक्रोसॉफ्ट द्वारा विकसित क्लाइंट सॉफ़्टवेयर, सर्वर सॉफ़्टवेयर और सेवाओं के एक परिवार का नाम है। बिल गेट्स द्वारा सर्वप्रथम दिनांक 1 अगस्त 1988 को लास वेगास में कंप्युटर डीलरों की प्रदर्शनी (कॉमडेक्स) में इसकी घोषणा की गई थी। प्रारंभ में, ऑफिस के पहले संस्करण में माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल और माइक्रोसॉफ्ट पॉवरपॉइंट शामिल थे। पिछले कुछ वर्षों में, सामान्य स्पेल चेकर जैसी साझा सुविधाओं के साथ डेटा एकीकरण के उद्देश्यपरक सामंजस्य और भाषा अनुप्रयोग के लिए कार्यालय अनुप्रयोग काफी हद तक करीब हो गए हैं । कार्यालय अनुप्रयोग ब्रांड के तहत व्यापार सॉफ्टवेयर के लिए माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, कार्यालय को एक विकास मंच के रूप में भी रखता है ।

माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस (Microsoft Office) या ऑफिस में एक वर्ड प्रोसेसर (वर्ड), एक स्प्रेडशीट प्रोग्राम (एक्सेल) और एक प्रेजेंटेशन प्रोग्राम (पावरपॉइंट), एक ईमेल क्लाइंट (आउटलुक), एक डेटाबेस मैनेजमेंट सिस्टम (एक्सेस) और एक डेस्कटॉप पब्लिशिंग ऐप (प्रकाशक) शामिल हैं।

विभिन्न अंत-उपयोगकर्ताओं और कंप्यूटिंग वातावरणों के लिए लक्षित कई संस्करणों में माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस निर्मित होता है। मूल और सबसे व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला संस्करण, डेस्कटॉप संस्करण है, जो विंडोज़ और मैकओस ऑपरेटिंग सिस्टम चलाने वाले पीसी के लिए उपलब्ध है। ऑपरेटिंग सिस्टम वह होता है जो की किसी भी डिवाइस को कंट्रोल करता है। माइक्रोसॉफ्ट एंड्रॉयड (Android) और आईफोन ऑपरेटिंग सिस्टम (iOS) के लिए मोबाइल ऐप भी रखता है। इसी प्रकार आईफोन ऑपरेटिंग सिस्टम भी आईफोन को कंट्रोल करता है जो केवल एप्पल के मोबाइल में ही देखने को मिलता है। यह केवल आईफोन ऑपरेटिंग में ही नहीं बल्कि आईपेड, आइपॉड, इत्यादि में भी देखने को मिलता है। आप सभी को यह भी बता दे की आईओएस विश्व का दूसरा पसंदीदा मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम है। इस ऑपरेटिंग सिस्टम को दिनांक 29 जून 2007 में जारी किया गया था। विश्व में प्रथम स्थान लोकप्रिय ऑपरेटिंग सिस्टम एंड्राइड है। वेब कार्यालय सॉफ्टवेयर का एक संस्करण है जो एक वेब ब्राउज़र के भीतर चलता है।

माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस ऑपरेटिंग सिस्टम के मूल अनुप्रयोग एव सेवाएं (Core Applications and Services) निम्नानुसार है:

माइक्रोसॉफ्ट वर्ड (Ms-Word)

"माइक्रोसॉफ्ट वर्ड" एक वर्ड प्रोसेसर है जो माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस और अब बंद हो चुके माइक्रोसॉफ्ट वर्क्स के कुछ संस्करणों में शामिल है। वर्ड का पहला संस्करण, वर्ष 1983 की शरद ऋतु में जारी किया गया था, जो MS-DOS ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए था और जिसे उपयोगकर्ताओं के लिए कंप्यूटर माउस के प्रयोग हेतु पेश किया गया । एम एस **वर्ड** हर एक यूजर के उपयोग में आने वाला

एक ऐसा प्रोग्राम है जिसमें **वर्ड** प्रोसेसिंग से सम्बंधित कई तरह के छोटे-बड़े कामों को किया जा सकता है। चाहे कुछ टाइपिंग करने की बात हो या कोई एडवांस या लम्बी डॉक्यूमेंट, बुकलेट, रिज्यूम इत्यादि बनाने की, **माइक्रोसॉफ्ट वर्ड** में बड़े ही आसानी से कर सकते है। Ms Word के कुल 14 संस्करण (Version) हैं, जिनमें अलग नए-नए फीचर्स को जोड़ा गया और उस हिसाब से नए संस्करणों को जारी किया गया। Ms Word के कुछ खास संस्करण 2000, 2002, 2003, 2007, 2010, 2013 है।

मैक (Macintosh) के लिए 'वर्ड' वर्ष 1985 में जारी किया गया था जो माइक्रोसॉफ्ट वर्ड का पहला ग्राफिकल संस्करण था। हालाँकि, Word 2007 ने इस प्रारूप को Office Open XML के पक्ष में हटा दिया, जिसे बाद में एक्मा इंटरनेशनल द्वारा एक खुले प्रारूप के रूप में मानकीकृत किया गया। पोर्टेबल डॉक्यूमेंट फॉर्मेट (पीडीएफ) और ओपन डॉक्यूमेंट (ओडीएफ) के लिए समर्थन पहली बार वर्ड 2007 में विंडोज के लिए वर्ड में पेश किया गया था।

माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल (Ms-Excel)

माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल एक ऐसा लोकप्रिय स्प्रेडशीट सिस्टम है, जो कॉलम (columns) और पंक्तियों (rows) में किसी भी डाटा को व्यवस्थित करता है और जिसमें विभिन्न सूत्रों (formulae) के माध्यम से डाटा डाला और सेट किया जा सकता है। माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल एक स्प्रेडशीट संपादक है जिसने मूल रूप से प्रमुख लोटस 1-2-3 के साथ प्रतिस्पर्धा की और अंततः इसे बेच दिया। माइक्रोसॉफ्ट ने वर्ष 1985 में मैक ओएस के लिए एक्सेल का पहला संस्करण और नवंबर 1987 में पहला विंडोज संस्करण जारी किया।

एम एस एक्सेल डाटा को व्यवस्थित करने के अलावा कैलकुलेशन करने, निर्णय लेने, डाटा का ग्राफ तैयार करने, रिपोर्ट तैयार करने और वेबसाइट पर डाटा के साथ काम करने इत्यादि की सुविधा देता है। एक्सेल 2003 की वर्कशीट 65,536 पंक्तियाँ और 256 स्तंभों बनी होती है। प्रत्येक पंक्ति और स्तम्भ का विभाजन सेल कहलाता है और डेटा यहीं स्टोर होता है ।

माइक्रोसॉफ्ट पावर पॉइंट (Ms-Power Point)

माइक्रोसॉफ्ट पावर पॉइंट एक प्रस्तुति कार्यक्रम है जिसका उपयोग पाठ, ग्राफिक्स और अन्य वस्तुओं से बना स्लाइड शो बनाने के लिए किया जाता है जिसे ऑन-स्क्रीन प्रदर्शित किया जा सकता है और प्रस्तुतकर्ता द्वारा दिखाया जा सकता है या पारदर्शिता या स्लाइड पर मुद्रित किया जा सकता है। इसमें पावर पॉइंट की विंडो को तीन भागों में बांटकर दिखाया जाता है, इसके बाएं भाग में टेक्स्ट पर और दाएं ऊपरी भाग में चित्रों, रंगों आदि पर कार्य किया जा सकता है। इसके साथ ही दाएं नीचे के भाग में आप नोट्स भर सकते है।

माइक्रोसॉफ्ट वन नोट (Ms-One Note)

माइक्रोसॉफ्ट वन नोट एक व्यक्तिगत सूचना प्रबंधन ऐप है, जो आपको एक डिजिटल नोटबुक में सभी प्रकार के नोट (notes) लेने में मदद करने के लिए डिजाइन किया गया है। आप किसी भी

तरह से अपने नोट्स (notes) को व्यवस्थित कर सकते हैं, उन्हें दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं, और उपकरणों में सामग्री को संयोजित (Sync) कर सकते हैं, इसलिए वे हमेशा आपके पास रहते है । वन नोट की सबसे अच्छी बात यह है कि यह सुविधाओं से भरपूर है। यह एक नोट लेने वाला प्रोग्राम है जो हस्तलिखित या टाइप किए गए नोट्स, आरेखण, स्क्रीन क्लिपिंग और ऑडियो कमेंट्री एकत्र करता है।

वन नोट को शुरू में एक स्टैंडअलोन ऐप के रूप में पेश किया गया था, जिसे किसी माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस संस्करण में शामिल नहीं किया गया था। हालाँकि, वन नोट अंततः माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस का एक मुख्य घटक बन गया। .

माइक्रोसॉफ्ट आउट्लुक (Ms-Outlook)

माइक्रोसॉफ्ट आउट्लुक एक प्रकार का व्यक्तिगत सूचना प्रबंधन एवं ई-मेल भेजने का सॉफ्टवेयर है। इसे माइक्रोसॉफ्ट कंपनी ने बनाया था और यह एम एस ऑफिस का एक सॉफ्टवेयर है। आउटलुक आपको ईमेल संदेश भेजने और प्राप्त करने, अपना कैलेंडर प्रबंधित करने, अपने संपर्कों के नाम और नंबर संग्रहित करने और अपने कार्यों को ट्रैक करने की अनुमति देता है। माइक्रोसॉफ्ट आउट्लुक की सबसे बड़ी विशेषता ये है की इसमें आप एक से अधिक ईमेल आईडी को जोड़ सकते है, जिससे सभी ईमेल आईडी के ईमेल आपको एक inbox में प्राप्त होते है ।

माइक्रोसॉफ्ट वनड्राइव (Ms-One Drive)

माइक्रोसॉफ्ट वन ड्राइव एक ऑनलाइन फाइल होस्टिंग (क्लाउड स्टोरेज) सेवा है जो उपयोगकर्ता को ऑनलाइन डेटा स्टोर करने की सुविधा उपलब्ध करवाती है। इसकी मदद से उपयोगकर्ता अपनी किसी भी महत्वपूर्ण या निजी डाटा पत्रावलियों को ऑनलाइन संग्रहित करके सुरक्षित रख सकता है और जरूरत होने पर अपने संग्रहित किये गये डाटा को डाउनलोड या साझा भी कर सकता है। यहाँ पर 15 जीबी तक की डाटा पत्रावलियों को ड्राइव में रख सकते हैं और उन्हें किसी भी डिवाइस से निकाल सकते हैं, इसके अतिरिक्त इसमें 5 जीबी तक का मुफ़्त क्लाउड स्टोरेज मिलता है । इसे गूगल प्ले स्टोर या एप्पल स्टोर से ऐप डाउनलोड कर आसानी से इंस्टॉल किया जा सकता है ।

माइक्रोसॉफ्ट टीम्स (Ms-Teams)

माइक्रोसॉफ्ट टीम्स कई संचार एवं मिल कर काम करने वाले माध्यमों का एकीकृत रूप है, जिसमें कार्यालय में होने वाले चैट, वीडियो मीटिंग, फ़ाइल संग्रह (और उनका आदान-प्रदान) के साथ-साथ अन्य एप के साथ जुड़ाव शामिल है। यह ऑफिस 365 के सब्स्क्रिप्शन के साथ-साथ अन्य गैर-माइक्रोसॉफ्ट उत्पादों के साथ भी काम करता है। प्रतिस्पर्धियों पर माइक्रोसॉफ्ट टीम का मुख्य लाभ ऑफिस 365 के साथ इसका गहरा एकीकरण है । यह मूल रूप से वर्ड, पॉवरपॉइंट और माइक्रोसॉफ्ट 365 के साथ एकीकृत होता है। माइक्रोसॉफ्ट टीम मीटिंग की समय सीमा 30 घंटे है ।

वेब पर कार्यालय वेब पर कार्यालय का व्यक्तिगत संस्करण Office.com वेबसाइट के माध्यम से माइक्रोसॉफ्ट खाते के साथ आम जनता के लिए नि:शुल्क उपलब्ध है, जिसने स्काईड्राइव (अब

वनड्राइव) और ऑफिस लाइव वर्कस्पेस का स्थान ले लिया है। एंटरप्राइज़-प्रबंधित संस्करण ऑफिस 365 के माध्यम से उपलब्ध है। फरवरी 2013 में, साइन इन किए बिना स्काईड्राइव पर फ़ाइलों को देखने और संपादित करने की क्षमता जोड़ी गई थी। सेवा को एंटरप्राइज़ वातावरण में शेयरपॉइंट ऐप के रूप में या ऑफिस वेब ऐप सर्वर के माध्यम से निजी तौर पर भी स्थापित किया जा सकता है। माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस सुइट अन्य वेब ऐप भी प्रदान करता है, जैसे कि आउटलुक वेब ऐप (पूर्व में आउटलुक वेब एक्सेस), लिंक वेब ऐप (पूर्व में ऑफिस कम्युनिकेटर वेब एक्सेस), प्रोजेक्ट वेब ऐप (पूर्व में प्रोजेक्ट वेब एक्सेस) इसके अतिरिक्त, माइक्रोसॉफ्ट वेब पर कार्यालय के माध्यम से एक वेबसाइट पर कार्यालय दस्तावेजों को देखने के लिए ऑनलाइन डॉक व्यूअर के नाम से भी एक सेवा प्रदान करता है। समर्थित वेब ब्राउज़र में माइक्रोसॉफ्ट एज, इंटरनेट इक्स्प्लोरर 11, फ़ायरफ़ॉक्स या गूगल क्रोम के नवीनतम संस्करण के साथ-साथ ओ एस एक्स 10.8 या बाद के संस्करण के लिए सफारी शामिल हैं।

पासवर्ड सुरक्षा

माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस में एक सुरक्षा सुविधा है जो उपयोगकर्ताओं को उपयोगकर्ता द्वारा प्रदान किए गए पासवर्ड के साथ ऑफिस (वर्ड, एक्सेल, पावर पॉइंट, एक्सैस, स्काईप बिजनस) दस्तावेज़ों को एन्क्रिप्ट करने की अनुमति देती है। पासवर्ड में 255 वर्ण तक हो सकते हैं और डिफ़ॉल्ट रूप से एईएस 128-बिट उन्नत एन्क्रिप्शन का उपयोग करता है। पासवर्ड का उपयोग संपूर्ण दस्तावेज़, वर्कशीट या प्रस्तुति के संशोधन को प्रतिबंधित करने के लिए भी किया जा सकता है। दस्तावेज़ एन्क्रिप्शन की कमी के कारण, हालांकि, इन पासवर्डों को तृतीय-पक्ष क्रैकिंग सॉफ़्टवेयर का उपयोग करके हटाया जा सकता है।

निष्कर्ष

ऑफिस 2013 के बाद से, माइक्रोसॉफ्ट ने 'ऑफिस 365' को माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस प्राप्त करने के प्राथमिक साधन के रूप में प्रचारित किया है । यह "सदस्यता व्यवसाय मॉडल" पर सॉफ़्टवेयर और अन्य सेवाओं के उपयोग की अनुमति देता है। वर्ष 2017 में, 'ऑफिस 365' के राजस्व ने पारंपरिक लाइसेंस बिक्री को पीछे छोड़ दिया। माइक्रोसॉफ्ट ने अपने अधिकांश मानक 'ऑफिस 365' संस्करणों को "माइक्रोसॉफ्ट 365" के रूप में पुनः ब्रांडेड किया, ताकि आंतरिक माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस समूह से परे सुविधाओं और सेवाओं को शामिल किया जा सके।

अक्टूबर 2022 में, माइक्रोसॉफ्ट ने घोषणा की कि वह जनवरी 2023 तक माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस ब्रांड को "माइक्रोसॉफ्ट 365" के पक्ष में चरणबद्ध तरीके से हटा देगा।

राजीव भाटिया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिफाजत

पेड़ तो पेड़ हैं...
लगाया हो अशोक गहलोत ने,

या कि वसुन्धरा राजे ने,

अनदेखी हो जाती है।

अशोक जी के पेड़ उजड़ जाते हैं

बिना पानी, हिफाजत के

और ऐसा ही होता है

वसुन्धरा जी के साथ भी ।

उनके द्वारा बहुत ही करीने से संवारे गये

लहलहाते, महकते बाग को

कर दिया जाता है क्षत-विक्षत ।

क्या वसुन्धरा जी खुद आती है पेड़ को उजाड़ने

या अशोक जी आते हैं बाग को करने तबाह ।

नहीं, सोच बन गई खुन्नस निकालने की ।

बीकानेर मे गहलोत द्वारा विकसित इंदिरा फाउण्टेन

हो जाता है तबाह राजे के समय में,

और गुलाबपुरा में राजे काल में विकसित

दीनदयाल उपाध्याय पार्क,

गहलोत के समय में बन जाता है चोरों की पानागाह,

क्योकि उस निर्जन, बंजर जगह में कोई नहीं फटकता ।

यही हाल है योजनाओं का भी,

उपेक्षित होती है एक दूसरे की योजनाएँ
या कर दिया जाता है नाम परिवर्तन उनका ।
मार्गों और सड़कों का नाम भी हो जाता परिवर्तित
चहेते नेताओं के नाम पर,
और यह जनता देखती है ठगी-सी
किंकर्तव्यविमूढ होकर ।
क्या हमने चुना था उन्हें सिर्फ इसलिए,
क्या यही अर्थ है परिवर्तन का, बदलाव का ।
हिफाजत से ही रह पाएगा कायम यह चमन
कब करेंगे हम एक दूसरे की हिफाजत ।
इसलिए आईये रखे,
एक दूसरे के कर्मों का मान
और करें हिफाजत इस चमन की,
जो गहलोत का भी है और राजे का भी
और हम सब का भी ।

गुरू दयाल

(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

राजभाषा नियम 7, कर्मचारी को आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करने तथा स्वयं पर तामिल किए जाने वाले आदेश, सूचना आदि हिन्दी में प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करता है।

भारत माता की जय

जय भारत अचला,
जन मन मचला,
वीर प्रसूता, कहलाती।
चूनर है धानी, बड़ी सुहानी,
अन्न और धन, उपजाती।।
उन्मुक्त तिरंगा, सुरसरि गंगा,
भाल हिमालय, उन्नत है।
सब सागर खारे, चरण पखारे,
वसुधा लगती, जन्नत है।।
गंगा है पावन, सब मनभावन,
प्लावित करती, जल प्यारा।
करती पाप शमन, धोती तनमन,
कलकल करती, रस धारा।।
तरु तृण लता वसन,
सब वन उपवन,
शस्य श्यामला, ये धरती।
भ्रमर करे गुंजन, सब मन रंजन,
उदर सभी का, ये भरती।।
जय भारत धरणी, पार उतरणी,
पुण्य धरा है, सब पाले।
इतिहास पुरातन, गाए जन मन,
गौरव गाथा, सब गा ले।

यह देश हमारा, लगता प्यारा,
यश गान सदा, गूँजेगा।
यह भरत मेदिनी, सबकी जननी,
इसको जग सब, पूजेगा।।
ऋतुएं हैं सुखकर, सरस अरु मधुर,
फल अमृतोपम, मिलते हैं।
नाना है तरुवर, सुरभित सुंदर,
सुमन यहाँ पर, खिलते हैं।।
धरती क्षमामयी, वात्सल्यमयी,
माँ मंगलकरणी, दुखहर्त्री।
संतान सभी हम, करते हैं श्रम,
पाते आश्रय, सुखकर्त्री।।
शीतल मलय पवन, सुरभित हैं वन,
पुण्यभूमि यह, वसुंधरा।
यह शरणदायिनी, विश्वपालिनी,
आँचल इसका, स्नेह भरा।
रक्त-सिक्त धरणी, बहती तरणी,
शांति प्रीति सुख, सब भर दे।
फैला यश चहुँ दिशि,
नित्य दिवस निशि,
उत्कर्षमयी, यह वर दे।।

लक्ष्मी खूंटेटा
अतिथि रचनाकार

वर्तमान में महात्मा गाँधी के सामाजिक दर्शन की प्रासंगिकता

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी जी की अनवरत प्रासंगिकता तथा उपयोगिता के चलते इनको एक युग- पुरुष अथवा युग-निर्माता कहना किसी भी प्रकार की कोई भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। गाँधी जी (समग्र व्यक्तित्व एवं दर्शन को) को पढना, समझना तथा जीवन में उतारना किसी भी पाठक के लिए उपयोगी ही नहीं, बल्कि अपरिहार्य होता जा रहा है। प्रस्तुत आलेख में गाँधी जी के रामराज्य की संकल्पना से सम्बंधित उपयोगिता पर मेरा प्रयास रहेगा। समाज द्वारा व्यवसायों का उद्भव समाज से ही होता है, तथा उनके विकास में समय लगता है। ये शून्य में विकसित नहीं होते। अपने अस्तित्व एवं विकास के लिये उन्हें निरंतर अपने वातावरण से अन्तर्क्रिया करते रहना पड़ता है। सतत् चलने वाले घटनाक्रम उनके विकास को प्रभावित करते हैं व उन्हें आकार प्रदान करते है। यह समाज विशेष के समाजिक, आर्थिक प्रतिमानों व संस्कृति के अनुसार उनके अनुकूलन के कारण ही आज व्यावसायिक समाज कार्य अस्तित्व में है। भारतीय संदर्भ में यह समान रूप से सत्य है। भारतीय परिपेक्ष्य में एक व्यावसायिक सामाजिक कार्यकर्ता इसे अनदेखा नहीं कर सकता क्योंकि यह सौ प्रतिशत देशज है और यह पूर्णतः भारतीय दर्शन, संस्कृति व परमपराओं पर आधारित है। देश में समाज कार्य की इन दो विधाओं के मध्य, उनके दर्शन, अनुभव, विभिन्न क्षेत्र, पद्धति व तकनीक के संदर्भ में सहयोग स्थापित करने की बहुत गुंजाइश है। गाँधीवादी समाज कार्य की समझ एक व्यावसायिक सामाजिक कार्यकर्ता की 'भारतीय समाज के मानस व प्रकृति को समझने की अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है जिसके परिणामस्वरूप अच्छी सेवाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। मोहन दास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर गुजरात में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ। उनकी प्राथमिक शिक्षा भारत में हुई। इंग्लैंड में कानून की शिक्षा ग्रहण करने के लिये गये थे, तथा 1891 में बैरिस्टर बनकर लौटे। उनके अंदर के सामाजिक कार्यकर्ता का अभ्युदय 1893 में हुआ जब वे दक्षिण अफ्रिका गये, जहां उन्होंने भारतीय समुदाय को संगठित किया और रंगभेद के खिलाफ धर्म युद्ध प्रारंभ किया। यही वह स्थान है जहां वो पत्रकार बने और उन्होंने इंडियन ओपीनियन' नामक समाचार पत्र प्रारंभ किया। उन्होंने श्रीमद् भगवद्गीता तथा रस्किन की किताब 'अनटू दिस लास्ट का अध्ययन करना प्रारंभ किया जिसने उनके सामाजिक-राजनैतिक नेता के जीवन की नींव रखी। रस्किन की किताब में उन्होंने तीन आधारभूत सिद्धान्त पाए। (1) सबकी भलाई में ही व्यक्तिगत भलाई है। (2) एक वकील के कार्य का मूल्य एक नाई के कार्य के बराबर होता है तथा सभी को अपने काम से आजीविका कमाने का समान अधिकार है। (3) एक मजदूर का जीवन अर्थात भूमि को जोतने वाले का जीवन तथा हस्तशिल्पी का जीवन जीने

योग्य जीवन है। ये तीनों सिद्धान्त गाँधीजी की प्रणाली एवम् रचनात्मक कार्यक्रम में दृष्टिगोचर होते हैं, जोकि उन्होंने भारतीय लोगों के समक्ष बाद में प्रस्तुत किये।

गाँधीजी ने एक सामाजिक कार्यकर्ता और आंदोलनकर्ता के रूप में दृढतापूर्वक इस बात पर जोर दिया कि गाँधीवाद जैसा कुछ भी नहीं है। इसी प्रकार उन्होंने इस शब्द गाँधीवादी समाज कार्य को हटा दिया होता परन्तु उनके समाज कार्य करने के तौर-तरीके को वर्तमान में गाँधीवादी समाज कार्य की मान्यता प्राप्त हो चुकी है। इसे तब तक अच्छी तरह से नहीं समझा जा सकता जब तक कि गाँधीजी के व्यक्तित्व के समाज कार्य वाले पहलू की जानकारी न हो। ये महात्मा के नाम से जाने जाते थे। एक महान आत्मा राष्ट्रपिता या साधारण रूप से बापू, जिसने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की अगुवाई की, एक पत्रकार, वकील, प्राकृतिक चिकित्सक, एक सामजिक, राजनितिक, दार्शनिक, एक समाज सुधारक, सामाजिक अभियन्ता एवं चिकित्सक आदि सभी उनकी शख्सियत के विभिन्न पहलू थे। उन्होंने समाज कार्य की कुछ पद्धतियों का आविष्कार किया जो अभी भी जीवित हैं, और जिनका उपयोग अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के लोगों जैसे डा. मार्टिन लूथर किंग और नेलसन मंडेला ने भी किया है। गाँधी के प्रति ऋणी होते हुये नोबल पुरूस्कार प्राप्त डा. किंग ने लिखा कि मुष्टो वैधम व मिल के आपयोगिताबाद से, मार्कस व लेनिन के क्रांतिकारी तरीकों से, तथा हाव्स की सामाजिक अनुबंध थ्योरी, द बैंक आफ नेचर का रूसो आशावाद और नीत्शे का अतिमानव (Superman) दर्शन आदि से जो बौद्धिक व नैतिक संतुष्टि प्राप्त नहीं हुई वह मुझे गाँधी की अहिंसक विरोध दर्शन से प्राप्त हुई। मुझे यह महसूस हुआ कि स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करने वाले उत्पीड़ित लोगों के लिये केवल यही तरीका नैतिक व व्यावहारिक रूप से सही था।

गाँधी मनुष्य के व्यक्तित्व और उसके व्यवहार पर वातावरण के प्रभाव को मान्यता देते हैं। उनके अनुसार यदि इसको पृथक रखने का प्रयास करें तब भी कोई भी मनुष्य अपने वातावरण के प्रभाव से मुक्त नहीं हो सकता परन्तु मनुष्य सिर्फ परिस्थितिजन्य प्राणी नहीं है। मनुष्य को यह सौभाग्य प्राप्त है कि वह विषम परिस्थितियों से उभर सकता है। मनुष्य के व्यवहार और व्यक्तित्व में परिवर्तन के अनेक तरीके हो सकते है। गाँधी के अनुसार उनमें से एक हैं आत्म- नियंत्रण, मनुष्य के जीवन में यह एक सकारात्मक कारक हैं। स्वभाव से पशु कोई आत्म नियंत्रण नहीं जानता। मनुष्य, मनुष्य इसलिये हैं, क्योंकि उसमें आत्म नियंत्रण की क्षमता होती हैं अर्थात बुनियादी प्रवृत्तियों जैसे घृणा, स्वार्थीपन पर नियंत्रण करके प्रेम और शुभकामनाओं से जीवन स्तर ऊँचा उठाए। गाँधी ने आदर्श समाज को 'रामराज्य' का नाम दिया अर्थात पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य। अपने साप्ताहिक पत्रिका 'हरिजन' में उन्होंने लिखा कि कोई गरीब नहीं होगा न ही भिखारी, ना ही ऊँचा ना नीचा, ना ही करोड़पति मालिक, ना ही भूखे कर्मचारी, ना ही नशीले पेय, ना ही दवाएं, महिलाओं के लिये पुरुषों के समान आदर होगा और पुरूष को ब्रम्हचर्य व शुद्धता की चौकसी सर्तकता से की जाएगी। जहां अस्पृश्यता नहीं होगी

और जहां सभी धर्मों का समान रूप से आदर होगा। जहां सभी अभिमानी एवं अपनी स्वेच्छा से अपनी रोजी रोटी कमाने वाले होंगे।

गाँधी के आदर्श समाज में दोनों शहर व गाँव है, परन्तु वह शहरों में रहने वालों के द्वारा ग्रामीणों के शोषण के विरुद्ध थे। वे शहर को बुरा, एक जाल तथा एक अनुपयोगी बाधा समझते थे जहाँ मनुष्य खुशी से नहीं रह सकता एवं यह मनुष्य जाति के लिए एवं विश्व के लिये दुर्भाग्यवश है। उनका यह अनुभव था कि शहरों में अंग्रेजी शिक्षित पुरूष व स्त्रियों ने अपराधिक रूप से भारत के गाँवों की उपेक्षा की है, जोकी देश की रीढ़ की हड्डी है। वास्तव में गाँवों का खून वह सीमेंट है, जिससे शहर की इमारत का निर्माण हुआ हैं। वह रक्त जो की शहर की धमनियों में फैल रहा है, फिर से गांवों की धमनियों में दौड़ना चाहिये। वह यह देखने की आशा करते थे कि उद्योग व कृषि में शहर व गांवों में शोषण मुक्त एक युक्तिसंगत सम्पूर्ण संतुलन हो। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता हैं कि गाँधी का आदर्श समाज एक ग्रामीण समाज है। गाँधी ने यह विश्वास किया तथा अनेक बार दोहराया कि भारत हमें कुछ शहरों में नहीं परन्तु उसके गांवों में मिलता है। वास्तविक भारत गांवों में बसता है। यदि भारतीय सभ्यता एक स्थायी विश्व के निर्माण में पूरा सहयोग देती है तो इसी विशाल मानवता के समूह को फिर से जीवन जीना पड़ेगा। मैं यह कहना चाहूंगा कि यदि गांव नष्ट होते हैं तो भारत भी नष्ट हो जाएगा। भारत, भारत नहीं रहेगा। विश्व में उसका लक्ष्य खो जाएगा। गाँधी को ग्रामीण लोगों की बुद्धिमत्ता पर पूरा विश्वास था। उनका यह विचार था कि सदियों पुरानी भारतीय संस्कृति और बुद्धिमानी आज भी चली आ रही है। "जिस क्षण आप उनसे (भारतीय ग्रामीण)" बात करना आरंभ करते हैं वो बोलने लगते हैं, उनके होठों से समझदारी टपकती है। उनके अपरिष्कृत बाहरी रूप के पीछे आत्मिकता का सैलाब मिलेगा मैं इसे ही संस्कृति कहता हूँ। आपको ऐसा पश्चिम में नहीं मिलेगा, भारतीय ग्रामीण के संदर्भ में सदियों पुरानी संस्कृति उनके अनगड रूप के पीछे छुपी हुई हैं। यदि ऊपरी सतह हटा दी जाए, ना मिटने वाली गरीबी और अज्ञान को हटा दें तो आपको सबसे परिष्कृत संस्कारों वाला स्वतंत्र नागरिक कैसा होना चाहिये, मालुम चल जाएगा।

प्रत्येक सामाजिक प्रयास गतिविधि या कार्यक्रम तथा उसमें लगे हुये लोग, तय किये हुये मूल्यों की प्राप्ति के लिये संयुक्त रूप से प्रयासरत रहते हैं। अतः स्पष्ट रूप से व्यावसायिक समाज कार्य (पी.एस. डबल्यू) और गाँधीवादी समाज कार्य (जी.एस. डब्ल्यू) ने अपने तय किये वे मूल्य हैं। प्रोफेसर हरबर्ट विनों जोकि व्यावसायिक समाज कार्य के दार्शनिक हैं, मनुष्य की मर्यादा, निर्बल लोगों के कल्याण व समानता के मूल्यों को प्रमुख मानते है। गांधी जी के मूल्यों में ऐसा स्पष्ट सीमांकन नहीं है। इनमें से 11 मूल्यों का उल्लेख आचार्य विनोबा भावे ने अपनी हिन्दी / संस्कृत पद्य में सुन्दरता से किया हैं। यह मूल्यों का लोक इस प्रकार है: गांधीजी की 11 प्रतिज्ञाएं अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रहमचर्य, - अपरिग्रह, शरीर श्रम, अस्वाद, सर्वभुत्रयावर्जना, सर्व धर्म समानता, स्वदेशी, स्पर्श भावना तथा अन्य तीन शांति, समानता और लोकतंत्र हैं।

किसी सजीव चीज को चोट न पहुँचाना निसंदेह अहिंसा का भाग है परन्तु यह इसकी निम्नतम अभिव्यक्ति है। अहिंसा के सिद्धान्त, विचार और अभिव्यक्ति के क्षेत्र में काफी व्यापक है। किसी भी बुरे विचार अवांछनीय जल्दबाजी, कार्य अधूरा छोड़ना, नफरत और किसी का बुरा चाहने से भी यह भंग हो जाती है। संसार को जो चाहिए, उसमें विघ्न डालने से भी यह भंग हो जाती है। अहिंसा के बिना सत्य को ढूंढना और प्राप्त करना असंभव है। अहिंसा और सत्य इतने जुड़े हुए हैं, कि वास्तविक रूप से इन्हें अलग करना असंभव होगा। ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अहिंसा प्रयोजन (पथ) है और सत्य लक्ष्य है। साधनों को प्राप्त करने के साधन हमारी पहुंच में होने चाहिए और इसीलिए अहिंसा हमारा परम कर्तव्य है। यदि हम अपने साधनों का ध्यान रखते हैं तो हम निश्चित ही जल्दी या देर से लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। जब हम इस तथ्य को समझ लेते हैं तो विजय निस्वयंभावी होगी। हमारे सभी कार्यकलाप सत्य पर केंद्रित होने चाहिये। हमारे जीवन का श्वास सत्य ही होना चाहिये, सही जीवन के सभी नियम बिना प्रयास के आ जायेंगे। यदि एक तीर्थयात्री की प्रगति में जब यह अवस्था आ जाती हैं तो आज्ञाकारी का सहज रूप होगी। परन्तु सत्य के बिना जीवन में कोई भी नियमों सिद्धान्तों का पालन नहीं किया जा सकता। प्रजातंत्र का सार यह है कि प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न प्रकार की अभिरूचियों का प्रतिनिधित्व करता है कि जिससे राष्ट्र का निर्माण होता है। यह सच है कि वह विशेष रूचियों के प्रतिनिधित्व की उपेक्षा नहीं करता न ही उसे करना चाहिये। पर इस प्रकार का प्रतिनिधित्व उसकी परीक्षा नही है। इस संदर्भ में आचार्य विनोवा भावे के विचार एक कदम आगे हैं। उनके अनुसार वर्तमान में प्रजातंत्र की दलगत राजनीति को ग्रहण लगा है। यह व्यक्ति उन्मुखी नहीं है परन्तु सत्ता उन्मुखीं है। अतः प्रजातंत्र राजनीति द्वारा नहीं चलाना चाहिये परन्तु लोक नीति द्वारा चलाना चाहिये अर्थात ऐसी नीति जो लोगों की लोगों के द्वारा और लोगों के लिये हो जहां निर्णय बहुमत के द्वारा न हो परन्तु सर्व सम्मति से लिये जाएँ।

शंकर लाल सीमावत

कनिष्ठ अनुवादक

बचपना

अपने अन्दर के बच्चे को मैंने खोने नहीं दिया,

आज भी, आसमां में उड़ते हुए हवाई जहाज को तब तक देखते हुए खुश होना,

जब तक वो मेरी नजरो से ओझल न हो जाए।

तितली के एक फूल से दूसरे फूल पर बैठते देखना,

उसे पकड़ना फिर उड़ा देना ।

बगीचे में चलते हुए फूलों को, पौधों को सहला देना।

गली में बच्चों को खेलते देख, उनके खेल में शामिल हो जाना।

कबूतर को जमीन पर चलते देख, उसे पकड़ने दौड़ना,

उसके उड़ जाने पर हताश हो जाना।

राम जी के घोड़े को अपने हाथ पर चलाना, फिर उड़ा देना।

आंगन में बिल्ली के आ जाने पर, उसे पानी से भिगोना,

उसके भाग जाने पर खुशी से उछल पड़ना।

कोयल और मोर की आवाज सुनकर, उनकी नकल उतारना।

हल्की हल्की बारिश में धूप निकलने पर, छत पर पहुँच जाना,

और आकाश में बनते हुए इन्द्रधनुष को निहारते हुए,

सब कुछ भूल जाना।

तेज बारिश में आंगन की नाली को बंद कर, पानी को इकट्टे होने देना,

फिर कागज की नाव बनाकर उसमे चलाना।

छत पर अक्सर कागज का जहाज बनाकर उड़ाना और,

हर बार कोशिश ये कि पहले से भी ज्यादा दूरी तक उड़ान भरे,

ऐसे में सफल होने पर प्रफ्फुलित होना।

अपने जन्म दिन पर मनपसंद उपहार के लिए मचलना,

फिर उसे लेकर ही मानना।

मेरी कोई बात नहीं मानने पर रूठ जाना,

मनाने पर ही कुछ खाना - पीना।

जरा सी चोट लगने पर आंसू बहाना,

चोट का इलाज हो जाते ही, मुस्कान का आ जाना,

जरा सी खुशी पर खिलखिला कर हँसना,

जरा से दुख पर उदास हो जाना।

एक अप्रैल को सबको अप्रैल फूल बनाना,

ऐसे में सब भूल जाना, उस पल को जीना।

सच में, मैंने अपने अन्दर के बच्चे को खोने नहीं दिया।

रीतिका मोहन

(से.नि.) हिंदी अधिकारी

महालेखाकार कार्यालय परिसर में स्थित चारों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ऑडिट सप्ताह - 2022 की झलकियाँ

ऑडिट सप्ताह
२१–२५ नवम्बर २०२२
AUDIT WEEK
21-25 NOVEMBER 2022
Sh. Nikhil Dey

Dedicated to Truth in Public Interest

महालेखाकार कार्यालय परिसर में स्थित चारों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह - 2022 की झलकियाँ

खवाड़ा
-2022
संयुक्त तत्वावधान में
खवाड़ा समारोह के
आयोजन
2 प्रात: 10.15 बजे
2 प्रात: 10.15 बजे
2 अपराह 02.15 बजे
अपराह 3.30 बजे
14 सितम्बर से 29 सितम्बर

दी पखवाड़ा
ारोह-2022
लयों के संयुक्त तत्वावधान में
हिन्दी पखवाड़ा समारोह के
विभिन्न आयोजन
हिन्दी दिवस समारोह
14 सितम्बर से 29
22
जयपुर

हिन्दी दिवस समारो
14 सितम्बर से 29 सितम्
2022
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेख
कार्यालय महालेखाकार (लेख
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS

सक्रिय रहें

अरे साहब आज तो बहुत तेजी से कदम बढा रहे हो, क्या बात है कोई ऊर्जादायक दवा लेकर आए हो क्या ? पार्क में प्रात: भ्रमण करते हुए शर्मा जी अपने चिर-परिचित मित्र वर्मा साहब का तेज स्वर सुनकर धीरे-धीरे टहलने लग गए ।

वर्मा जी फुर्ती से उनके नजदीक आ गए, दोनों ने एक दूसरे की कुशल क्षेम पुछी। दोनों सेवानिवृत बुजुर्ग एक दूसरे को कई दशकों से जानते थे । वे दोनों एक ही संस्थान में सहकर्मी रह चुके थे और अक्सर प्रात: भ्रमण के दौरान एक दूसरे से मिल जाते थे ।

अरे वर्मा जी, आज तो आप लगभग एक सप्ताह के अन्तराल से मिल रहे हो । भाई मैने तो कोई ऊर्जावर्धक दवा नहीं ली, हां कल अपने ही कार्यालय के पूर्व सहकर्मी राजेन्द्र कुमार पुरोहित, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के सेवानिवृति विदाई समारोह में भाग लेने के लिए मैं अपने कार्यालय चला गया था । शर्मा जी ने थोड़ा रूकते हुए कहा ।

अच्छा राजेन्द्र कुमार सेवानिवृत हो गये क्या ? उनसे तो सेवाकाल के दौरान मेरे भी अच्छे संबंध रहे है । वह तो लगभग चालीस वर्ष तक सेवारत होकर सेवानिवृत हुए होंगे। वर्मा जी ने कहा ।

हां आप सही कह रहे हैं। अब मैं आपको आज मेरी तेजी से चहलकदमी करने का कारण भी बता देता हूँ । वैसे तो आप जानते ही हैं कि अपने कार्यालय में मनोरंजन क्लब द्वारा सेवानिवृति विदाई समारोह का बड़ा भव्य आयोजन किया जाता है । शर्मा जी ने वर्मा जी की ओर देखते हुए कहा ।

शर्मा जी आप बिलकुल सही कह रहे हैं । अपने कार्यालय से सेवानिवृत होने वाले कार्मिकों के परिजन जो कि इस शुभ अवसर पर कार्यालय आते हैं, वे अपने कार्यालय भवन की साज-सज्जा व विदाई समारोह की भव्यता को सदैव याद रखते होगें । कह कर वर्मा जी ने शर्मा जी को उत्तर दिया । साथ ही यह भी कह दिया कि बंधुवर आपको तो सेवानिवृत हुए सात वर्ष बीत गए अब आपको ऐसी कौन सी बात याद आ गई जो आप आज इतनी फुर्ती से चल रहें हैं।

कल के सेवानिवृति विदाई समारोह में कार्यालय प्रमुख श्री के. सुब्रमण्यम (प्रधान महालेखाकार) महोदय ने जो उद्‌बोधन दिया, उसके कुछ अंश मुझे बहुत ज्यादा प्रभावित कर गए। उन्होंने सेवानिवृत होने वाले बंधुओं से कहा कि आपको इस बात कर गर्व होना चाहिए कि अपने सेवाकाल में आपको जन सेवा का सुअवसर मिला । शासकीय सेवा, लोक सेवा भगवान की

सेवा के समकक्ष है । लोक सेवा करना एक तरह से भगवान की सेवा करना है । इस आशय का प्रेरक वाक्य बेंगलूर विधानसभा के भवन पर बडे अक्षरों में अंकित किया हुआ है । आप बड़े ही सौभाग्यशाली रहे जो आपको अपने सेवाकाल में ऐसा सुअवसर मिला । दीर्घ अवधि तक आप अपनी सेवाऐं विभाग को दे कर आज सेवानिवृत हो रहे हैं। प्रधान महालेखाकार महोदय ने सेवानिवृत होने वाले कार्मिकों को सेवानिवृति के बाद भी सक्रिय बने रहने की सलाह दी ।

मुझको यह वाक्यांश बहुत ही प्रेरक लगे और मैंने इस बात पर गहराई से सोचा कि सेवानिवृति के बाद सेवानिवृत व्यक्ति की नियमित दिनचर्या में बहुत परिवर्तन आ जाता है । सेवाकाल में अपने कर्तव्य की पालना एवं कार्य निष्पादन के कारण सेवारत व्यक्ति सदेव सक्रिय व क्रियाशील बना रहता है व दिनचर्या समयबद्ध रहती है । सेवानिवृति के बाद भी उम्र के पड़ाव को दरकिनार कर सक्रिय रहना चाहिए । मैं इस बात से प्रेरणा ले कर सक्रिय व क्रियाशील बना रहूँगा ।

वाह साहब, शर्मा जी आपने तो आज बड़ी ही अच्छी बात बताई । सक्रिय व स्फूर्त बने रहना तो हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है क्योंकि यदि सक्रियता नहीं रहेगी तो व्यक्ति निष्क्रिय हो जाएगा व जड़ता व्याप्त हो जाएगी । हमें हर उम्र में सक्रिय बने रहने की आवश्यकता है। हमारा शरीर हर समय सक्रिय रहता है, उसके भीतर अंग निरन्तर सक्रिय बने रहते हैं और आलस्य व प्रमाद से शरीर में विकार पैदा होते हैं । अत: हमे सदैव सक्रिय रहना चाहिए ।

वाकई में विदाई समारोह में कार्यालय प्रमुख के सदविचार चिरस्मरणीय व अनुकरणीय है । कह कर वर्मा जी ने कहा- शर्मा जी आज की हमारी मुलाकात बहुत प्रेरक रही । कल हम फिर यहां पर ही मिलेगें ।

देव शर्मा

(से.नि.) सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

<u>रचनाकारों से अनुरोध</u>

विभाग से संबंधित एवं अन्य विषयों पर प्रकाशन सामग्री एवं प्रतिक्रियाएँ राजभाषा अनुभाग में व्यक्तिशः, डाक द्वारा अथवा ई-मेल पते singhv.raj.sca@cag.gov.in पर प्रेषित की जा सकती हैं। रचनाएँ हस्तलिखित/ यूनीकोड में टंकित एवं छाया चित्र स्कैन कर हार्ड/सॉफ्ट प्रति में मौलिकता एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ प्रेषित की जानी अपेक्षित हैं।

विश्व गुरूत्व एवं रोजगार हेतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली न्यायसंगत नहीं

शिक्षा एवं संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है। भूखण्ड राष्ट्र का देह है, साहित्य उसकी दृष्टि है, भाषा उसकी वाणी है, सभ्यता उसका श्रृंगार है, कलाएं उसका सौन्दर्य है. विज्ञान उसका वैश्विक शोध है, अर्थ उसका भण्डार है, संस्कृति उसका प्राण है। संस्कृति के स्वर्णिम सूत्र ने ही भारत को जगद्गुरू के सिंहासन पर बिठाया है। इसी कारण भारतीय शिक्षा पद्धति एवं संस्कृति विश्व की सर्वोच्च संस्कृति रही है तथा विश्व गुरु का स्थान भी इसी न्यायोचित शिक्षा पद्धति के द्वारा ही प्राप्त हुआ है। संस्कृति मानव जीवन को संस्कारित करने की वह दिव्य परम्परा है जिसमें मानव मन को परिष्कृत कर उसके अन्दर छिपे हुए दिव्य गुणों को उसके मूल-वास्तविक परिपूर्ण स्वरूप में प्रगाढ करने की चेष्टा की जाती है। इस क्रम में नर से नरत्व, नरत्व से देवत्व तथा देवत्व से ब्रहमत्व तथा उसमें जो मूल परिपूर्ण स्वरूप है उस तक उठने का प्रयास किया जाता है। प्रभु महावीर ने 'आचारांग में कहा है- मनुष्य के भीतर में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत अनंत चारित्र, अनंत बलवीर्य, अनंत क्षमता, अनंत तप भरा हुआ है। उसके भीतर अनंत आनंद की क्षमता है लेकिन वह इसे पहचान नहीं पाता। इसके प्रकटिकरण के लिए साधना, स्वाध्याय, शिक्षा, संस्कार, तप एवं श्रेष्ठ गुरू की आवश्यकता होती है। इन्हीं से वह आत्मा से परमात्मा बन सकता है तथा परमत्व एवं परम आनन्द को प्राप्त कर सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बन सकता है।

शिक्षा की पौराणिकता- भारतीय शिक्षा, दीक्षा एवं चिकित्सा का महत्व सदियों से रहा है। भारतीय शिक्षा जिसे हम 'गुरूकुल' एवं ऋषि परम्परा तथा गुरू शिष्य परम्परा के नाम से जानते हैं। ये ऐसी सकारात्मक व्यवस्थाएं थी जिनमें प्रवेश लेने के बाद सम्पूर्ण जीवन की सच्चाई को समझते हुए गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा सन्यासाश्रम का पूर्ण अध्ययन करते हुए जीवन के परम तत्व को आचरित एवं ग्रहण करके गुरूकुल के आश्रम में परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही जीवन के वास्तविक प्लेटफॉर्म पर कदम रखना होता था। गुरू एवं शिष्य परम्परा अद्भूत थी। ऐसी परम्परा जहां नैतिकता एवं नरत्व, देवत्व तथा ब्रहमत्व को प्राप्त करने का अध्ययन कराया जाता था। शिक्षा की ऐसी पद्धति जहां पर चौसठ विद्याओं, बहत्तर कलाओं तथा सोलह संस्कारों का व्यवहारिक अध्ययन करा कर निपुणता हासिल की जाती थी। विद्यार्थियों को सिखाया जाता था कि मनुष्य अनेक योनियों को पार करता हुआ शुभ अशुभ कर्मों के साथ आता है और अनेक पाशविक प्रवृति से बंधा रहता है। यथा आहार, निद्रा, भय, मैथुन, ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ आदि ऐसी प्रवृत्तियां है जो मनुष्य और पशु में समान है। अतः शिक्षा, संस्कार, तप, सत्संग, साधना के द्वारा मनुष्य को पाप एवं पशु प्रवृत्तीयों से उपर उठा कर उसे मनुष्यत्व में, मनुष्यत्व से देवत्व में तथा देवतत्व से ब्रहमत्व यानी विकास के सर्वोच्च शिखर तक पूर्णता तक पहुंचाने का प्रयास किया जाता था। विद्यार्थियों को स्पष्ट सिखाया जाता था कि मनुष्य अनन्त पथ का

यात्री है। इसी का परिणाम है कि महावीर और बुद्ध मोक्ष मार्गी बने, राम मर्यादा पुरूषोत्तम, कृष्ण कर्म योगी बने। नचीकेता भारत का वह बालक जिसने साक्षात यमराज से अमरता का रहस्य पूछा और पांच वर्ष का बालक ध्रुव तप के लिए वन में चला गया। छोटा सा बालक प्रह्लाद हिरण्यकशिपु के सामने निडर खड़ा हो गया। नरेन्द्र (स्वामी विवेकानन्द) काँपती सर्दी में गुरू (रामकृष्ण परमहंस) की खोज में तैर कर नदी पार कर गया तथा दयानन्द सरस्वती सत्य की खोज में निकल गये। आठ वर्ष का बालक शंकर ने सन्यास ले लिया।

प्राचीन काल में गुरूकुलों में मन्दिरों में ऋषियों के आश्रमों में तथा बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में शिक्षा का अध्ययन कराया जाता था। ब्रहमचर्य आश्रम-जीवन का पहला पड़ाव होता था। घर से दूर विद्यार्थी ऋषियों द्वारा संचालित गुरुकुलों में रहते थे। तक्षशीला, नालन्दा, विक्रमशीला, उज्जैनी प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में गिने जाते थे, जहां पर विदेशी छात्र भी अध्ययन के लिए आते थे। जैसे आज हार्वर्ड और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय हैं वैसे ही हमारे देश के यह विश्वविद्यालय थे। चीन, कोरिया, इण्डोनेशिया, जापान के छात्र भारत में आकर अध्ययन एवं शोध करते थे। चीनी यात्री व्हेनसांग, फाइयान तथा अन्य यात्रियों ने इन विश्वविद्यालयों के गुणों को विश्व स्तर तक पहुँचाया। तक्षशीला के अन्तर्गत चाणक्य ने अर्थशास्त्र दिया, चरक ने आयुर्वेद दिया तथा पाणिनि ने संस्कृत को सुधार कर व्याकरण से अवगत कराया। नालन्दा तो बुद्ध का ऐपीसेन्टर यानि की केन्द्र बिन्दु रहा। इन संस्थानों में प्रवेश परीक्षा ली जाती थी। केवल 20 प्रतिशत को ही मिल पाता था। इन विश्वविद्यालयों में 100 लेक्चर प्रति दिन होते थे। इनमें साइंस, मेडिसिन, मिलिट्री, आर्कीटेक्ट, लॉ, चिकित्सा, योग, न्याय, शब्द विद्या, संस्कृत विद्या आदि सिखाई जाती थी और शस्त्र एवं शास्त्र भी सिखाये जाते थे। जीवन के सम्पूर्ण विकास की शिक्षा इनमें दी जाती थी। कश्मीर के शारदा पीठ में पढ़े आदि शंकराचार्य से पूछे गये सभी प्रश्नों के सही उत्तर से ही उन्हें जगतगुरू का दर्जा दिया गया। इन विश्वविद्यालयों में रहना खाना तथा पढ़ना फ्री में होता था। नालन्दा विश्वविद्यालय के लिए सौ गांव मदद करते थे। राजा महाराजा भी मदद करते थे। कई जगह मंदिरों से सहायता प्राप्त होती थी। छात्र जब गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था तब वह हुनर के साथ अपना पुरुषार्थ करता और उसे बेरोजगार नहीं रहना पड़ता था। वह संस्कारयुक्त होकर अपना जीवन यापन करता था। शिक्षा प्रणाली न्यायोचित एवं मूल्यवान तथा संस्कृति से भी उच्च कोटी की थी।

विदेशी आक्रान्ताओं का प्रभाव- भारतीय शिक्षा प्रणाली जब चरम स्तर पर थी और विश्वगुरू बन चुकी थी तब नालन्दा विश्वविद्यालय की प्रसिद्धि मोहम्मद बख्तियार खिलजी को रास नहीं आयी और उसने नालन्दा पर आक्रमण कर उसे तबाह कर दिया। इस प्रकार धीरे- धीरे शिक्षा एवं संस्कृति का ह्रास होता गया तथा इसके विकास हेतु विशेष ध्यान नहीं दिया गया। विश्वविद्यालय अब छोटे गुरुकुल एवं मंदिरों में परिवर्तित कर दिए गये लेकिन शिक्षा के स्तर में

परिवर्तन नहीं हुआ। शिक्षा का स्तर उच्च ही रहा। शिक्षा का पूरा सिस्टम गुरूकुलों पर ही टिका हुआ था। मध्यकाल के बाद अंग्रेजों का भारत आने का उद्देश्य वाणिज्य एवं सत्ता स्थापित करना था। यहां की सम्पन्नता, भाषा एवं संस्कृति को नष्ट करना उनका उद्देश्य था लेकिन स्थानीय भाषा, शिक्षा का उच्च स्तर उनके लिए बड़ी बाधा थी इसलिए उन्होंने भारतीय संस्कृति को नष्ट करके अंग्रेजी भाषा की स्थापना करना, फूट डालना, जैसी गतिविधियों को अपनाया। इतिहासकार **'धर्मपाल जी'** (1922-2006) ने वर्ष 1960 में लन्दन में जाकर भारतीय शिक्षा पद्धति का अध्ययन किया। वहां पर शिक्षा के लिए ब्रिटिश सरकार के लार्ड मैकाले द्वारा 1835 में कराये गये सर्वे के तथ्यों को देखा तो आश्चर्य चकित तथ्य सामने आये। सर्वे रिपोर्ट में लिखा था भारत की शिक्षा प्रणाली बहुत ही उच्च स्तर की है, हर गांव में पाठशालाएं है, साक्षरता दर बहुत ऊंची है, शिक्षा पद्धति काफी एडवांस है तथा महाभारत एवं रामायण के साथ संस्कृत, गणित, विज्ञान, संगीत, नृत्य कॉमेडी, इत्यादि विषय पढ़ाये जाते है। छात्रों की उपस्थिति उच्च स्तर पर है। शिक्षा एवं शिक्षक दोनों अच्छे हैं। शिक्षक मन लगाकर पढ़ाते है, लड़के एवं लड़कियां साथ साथ पढ़ते हैं। क्षेत्रिय भाषा में अध्ययन कराया जाता है। इसलिए इसे अंग्रेजों ने 'द ब्यूटिफुल ट्री' का नाम दिया। इससे उनको खतरा होने की सम्भावना थी और स्थानीय एवं क्षेत्रिय भाषा भी उनके लिए बाधा थी। इसलिए उनका लक्ष्य इस 'ट्री' को काट देना था। पूरे भारत के गांव गांव में पाठशालाएं थी। सर्वे में ज्ञात हुआ अकेले तमिलनाडू में 1.5 लाख कॉलेज थे और 1.57 लाख गांव इसलिए अंग्रेजों ने इसे 'हायर लेवल इंस्टिट्यूट' का दर्जा दिया। इसमें 1500 सर्जरी के कॉलेज थे। सभी सर्जन नाई जाति के थे। यहां के विद्यार्थियों में 70 प्रतिशत शूद्र तथा 30 प्रतिशत ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य थे। शूद्रों के हाथों में सबसे बड़ी तकनीक थी। आर्कीटेक्ट सबसे नीची जाती पेरियार के हाथों में थी। प्रोफेसर स्थापत्य कला में निपुण थे तथा दक्षिण भारत में प्रमुख एवं प्रसिद्ध मंदिर उन्होंने ही डिजाइन किए थे।

मैकाले की शिक्षा नीति न्यायोचित नही- भारत में शिक्षा की उच्च स्तरीय संस्थान को समझने के बाद लॉड थॉमस बेबिंगटन मैकाले ने सर्वे (1835) द्वारा जानकारी हासिल करने के पश्चात् 'द ब्यूटीफल ट्री' को कैसे काटा जाए, इसके लिए दो बातों पर चिन्तन किया जिसमें भारतीय संस्कृति को ख़त्म करने के लिए न्याय व्यवस्था एवं शिक्षा व्यवस्था को बर्बाद कर देने का षड्यंत्र किया गया । जिससे संस्कृति बर्बाद हो जायेगी और भारत में अंग्रेजी को थोप दिया जायेगा। मैकाले की षडयन्त्रकारी शिक्षा नीति के कारण 1835 में 'इंग्लिश एजुकेशन एक्ट' पारित कर दिया गया जिसके अनुसार-

1. अंग्रेजी भाषा, अरबी और संस्कृत से अधिक परिष्कृत एवं सभ्य भाषा है।
2. अंग्रेजी पश्चिम भाषाओं में सबसे प्रभावशाली है, भारत अंग्रेजों के अधीन है, इसलिए भारत में इसका प्रचार प्रसार हो, जिससे व्यापार एवं वाणिज्य अधिक सुगम हो सके।

3. अंग्रेजी पढ़कर भारत विश्व से जुड़ जायेगा और उन्हीं की भांति सभ्य और सुसंस्कृत बन जायेगा।
4. हर भारतवासी अंग्रेजी पढ़े तथा अंग्रेजी सीखें। उन्हें संस्कृत और अरबी, अंग्रेजी की तुलना में निम्न कोटी की प्रतीत होती है।
5. अंग्रेज अगर चाहे तो भारत में भी अंग्रेजी भाषा के बुद्धिजीवियों का प्रार्दुभाव हो सकता है।
6. केवल अंग्रेजी भाषा द्वारा ही यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि भारत में ऐसे व्यक्ति पैदा हो जो रंग से और रक्त से भारतीय हो लेकिन विचारधारा में अंग्रेजी।

उपरोक्त प्रावधानों से भारतीय शिक्षा पद्धति पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनका उद्देश्य केवल अंग्रेजी को मान्यता दिलाना, क्षेत्रीय एवं स्थानीय भाषा को गौण करना, ऐसी भ्रांतियाँ उत्पन्न करना कि अंग्रेजी भाषा सर्वोच्च है, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। इस एक्ट के पारित होते ही क्रिश्चयन एवं मिशनरी स्कूलों का प्रादुर्भाव हुआ तथा भारत के मौलिक विद्यालय बंद होने लगे तथा कानून बना दिया गया कि जो स्कूल चलायेगें उन्हें 58 प्रतिशत टेक्स देना पड़ेगा। कर की मार तथा अकाल आदि से भूखमरी बढ़ने लगी। अकेले हुगली नगर में 1400 हिन्दु बालकों पर प्रभाव पड़ा। दक्षिण भारत में एक विशेष हुनर युक्त समुदाय जो निम्न जाति के परियार थे उनका मंदिरों में प्रवेश करना कानून बनवाकर बन्द करा दिया गया। जो पाठशालाएं चल रही थी वो बन्द हो गयी, सहायता बन्द हो गयी, गांवों पर अधिक लगान लगने से सहायता नहीं मिल पाती। इस प्रकार शिक्षा के बैक बोन को तोड़ कर रख दिया गया। उनका उद्देश्य मात्र प्रशासनिक कार्यों में 'हेल्पर' एवं 'क्लर्क' बनाना मात्र रह गया। इस एक्ट के बाद जगह जगह क्रिश्चयन मिशनरी स्कूल खोले गये। भारत के मंदिरों में फण्ड देना तथा मंदिरों में पंडितों की शिक्षा को बन्द कर दिया गया और जो इन नियमों को नहीं मानते उन्हें दण्डित किया जाने लगा।

मैकाले की शिक्षा नीति के परिणामस्वरुप जो हुनर शिक्षा के माध्यम से सिखाये गये वे समाप्त हो गये एवं उनकी उपयोगिता खत्म कर दी गयी। अंग्रेजी को उच्च भाषा तथा अरबी, संस्कृत को निम्न भाषा माना जाने लगा। इससे भारतीयों में निम्न मानसिकता का जन्म हुआ और वे अंग्रेजी को बड़ी इज्जत की भाषा मानने लगे जबकि सच्चाई यह थी कि 200 देशों में केवल 12 देशों में ही अंग्रेजी का वर्चस्व था तथा अन्य देशों में स्वयं की भाषाएं प्रचलित थी। ऐसी मानसिकता के कारण हमारी संस्कृति दब गई। अंग्रेज चाहते थे कि भारतीय केवल गुलामी करे, घरों में भी स्थानीय भाषा का उपयोग नहीं करे, फिल्म भी अंग्रेजी देखे, कपड़े परिधान भी उन्हीं की तरह पहने। इनके कारण भारतीयों में हीनता की भावना पैदा होने लगी। क्योंकि भारत के पास कोई विकल्प नहीं बचा। इस शिक्षा नीति के कारण भारत की रोजगारयुक्त तथा हुनर युक्त शिक्षा प्रणाली एवं संस्कृत के शास्त्र, वेद पुराण, रामायण, महाभारत का शैक्षणिक स्तर पर

अध्ययन बन्द करने से संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा। गुरूकुलों को अवैधानिक घोषित कर दिया गया।

ए.एस.ई.आर. की रिपोर्ट के अनुसार- 83 प्रतिशत भारतीय जो पढ़े लिखे थे वे रोजगार से वंचित हो गये या रोजगार पाने योग्य नहीं रहे। इतना ही नहीं इस अंग्रेजी नीति के कारण भारत जो पहले नॉबल पुरस्कार प्राप्त करते थे (जिनमें रविन्द्रनाथ टैगोर एवं जगदीश चन्द्र वसु दोनों को बंगाली भाषा में नॉबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था) उसके बाद आज तक ऐसा पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ जब कि छोटे -छोटे देश जैसे जर्मनी, फ्रांस के यूएसए को कई नॉबेल पुरस्कार प्राप्त हुए।

आधुनिक शिक्षा डिग्री देती है रोजगार नहीं - वर्तमान शिक्षाप्रणाली का आधार भी लॉर्ड मैकाले की शिक्षाप्रणाली ही है जिसमें आधारभूत परिवर्तन की आवश्यकता है। यह शिक्षा विषय का ज्ञान तो कराती है लेकिन उसका व्यवहारिक दृष्टिकोण गौण हो जाता है। जिस कारण व्यवहारिक एवं दैनिक जीवन के कार्य कलापों में ये विषय काम नहीं आते। जैसे साइंस पढ़ा लिखा, बैंक में, वाणिज्य में काम करता है, तकनीकी ज्ञानयुक्त व्यक्ति प्रशासनिक कार्य करता है अर्थात जो व्यक्ति जिसके लिए उपयुक्त है उसे यह उपयुक्त कार्य नहीं मिलता अर्थात् प्लेसमेन्ट सही नहीं होता। इसके लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय तो बना दिया गया लेकिन जितना विस्तार एवं बारीकी से उपयोग लेना था वह नहीं लिया जा रहा है। जो गुरूकुल सफलता की कसौटी पर खरे उतरते थे, रोजगार के व्यवहारिक शिक्षण पर आधारित थे वे नहीं रहे। जो अभी चल रहे है, पर्याप्त नहीं है, परिपूर्ण नहीं है तथा यथार्थ नहीं है। केवल डिग्री ओरिएण्टेड है। डिग्री केवल विद्यार्थी को नौकरी प्रवेश परीक्षा में इलिजीबिलीटी तक सीमित है अर्थात् इसके कारण वह प्रवेश परीक्षा दे सकता है परंतु नौकरी के लिए उसे प्रवेश परीक्षा पास करना, मेंस परीक्षा, इन्टरव्यू इत्यादि प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, तब जाकर उसे नौकरी की उम्मीद लगती है।

कोचिंग संस्थानों ने तो शिक्षा को व्यापार बना कर रख दिया है। विशिष्ट कोचिंग, कोर कोचिंग विभिन्न रूपों में, स्तरों में बाजार में उपलब्ध है। इनकी फीस आम आदमी देने में सक्षम नहीं है। इसके लिए ऋण लेकर पढ़ाते हैं। छोटी से छोटी पोस्ट के लिए तथा प्रवेश परीक्षा के लिए भी कोचिंग लेनी पड़ती है। आज बाजार में राजकीय शिक्षण संस्थानों के समानान्तर ही नहीं इनसे आगे प्राईवेट कोचिंग संस्थाएं बढ़ गयी है। प्रवेश परीक्षा के लिए पेपर लीक हो रहे हैं। 'नीट' का पेपर लीक कांड हाल ही में ताजा उदाहरण है। किसी भी क्षेत्र में नौकरी प्राप्ति हेतु परीक्षा करना भर्ती प्रक्रिया का अंग बन गया है। परिणाम यह है इसमें धन, बल, बाहु बल, राजनैतिक प्रभाव, प्रशासनिक प्रभाव आदि के कारण पारदर्शिता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। पहले पढ़ना कठिन फिर पढने के बाद नौकरी के लिए प्रवेश लेना कठिन । नौकरी लगने के बाद 'सूचि के पद का मिलना कठिन है। यहाँ यह कहावत चरितार्थ हो रही है- 'भण्यां पर गुण्या नहीं' अर्थात् पढ़ा लेकिन व्यवहार में आचरित नहीं किया।

इस प्रकार स्पष्ट है आज की शिक्षा प्रणाली व्यवहारिक जीवन तथा जीवन के उच्च मूल्यों की दृष्टि से न्यायोचित नहीं है। अध्ययनकर्ता स्वयं अपने अध्ययन से सन्तुष्ट नहीं है। अपने कार्य से सन्तुष्ट नहीं है। हर वक्त उसके मन में टीस रहती है। इतना ही नहीं पी.एच.डी. होल्डर्स का उच्च रिसर्च मैटर भी केवल लाइब्रेरी की शोभा बढ़ाने तक सीमित हो गया है। अतः आवश्यकता है कि शिक्षा को व्यवहारिक बनाई जाए, जो कम खर्चीली हो और आम आदमी इसके भार को उठा सके ऐसी योजना लेकर आया जाए। प्रवेश परीक्षाओं के नाम पर जो कोचिंग संस्थानों की लूट हो रही है उन्हें बन्द किया जाय, प्रेक्टिकल एप्रोच पर जोर दिया जाय, संख्यात्मक के स्थान पर गुणात्मकता को आधार बनाया जाए। पुनः गुरुकुल व्यवस्था को लागू किया जाए, जिससे गुरू शिष्य परम्परा को पुनः स्थान मिल सके। शिक्षक भी पुनः गुरु बनने का प्रयास करें। सरकार इस विषय पर चिन्तन करे कि शिक्षा को उद्योग एवं व्यापार की परिभाषा के स्थान पर शिक्षा को प्राथमिक आवश्यकता के रूप में अपनाया जाए। इस प्रकार के आमूलचूल परिवर्तन द्वारा ही हम शिक्षा को न्यायोचित कर पायेंगे। शिक्षा जीवन्त हो, संस्कारयुक्त हो तथा आध्यात्म के साथ संस्कृति की रक्षा करने वाली हो, तभी हम विश्व गुरूत्व को प्राप्त कर पायेंगे।

पदम चंद गांधी

(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी ह्रदय की भाषा हैं, जिसकी वजह से हमारे शब्द ह्रदय से निकलते हैं और ह्रदय तक पहुँचते हैं।

सोशल मीडिया और भारतीय समाज

भारतीय समाज में सोशल मीडिया का दौर तेजी से बढ़ रहा है। लोगों के पास किसी और चीज के लिए पैसे हो या ना हो, मगर मोबाइल लेने और उसमें रिचार्ज करवाने के लिए अवश्य है। हम और आप सोशल मीडिया पर अपना जितना समय खर्च कर रहे हैं, अगर इस समय का हम अपने जीवन काल में सदुपयोग करें तो हम और आप एक बेहतर इंसानों का समाज बना सकते हैं। सोशल मीडिया पर हम सिर्फ किसी पार्टी के समर्थक बनते जा रहे हैं या किसी विचारधारा के चक्कर में लोगों से आए दिन लड़ते झगड़ते रहते हैं। इस कारण हम अपने व्यक्तिगत जीवन में भी अपनी विचारधारा या अपनी समर्थन वाली राजनीति पार्टी के खिलाफ एक भी शब्द सुनना पसंद नहीं कर रहे हैं।

बहुत सारे लोग ऐसे भी हैं जो अपनी विचारधारा को लेकर अपने घर में भी आए दिन तनाव करते हैं। सोशल मीडिया के कारण हमारे भारतीय समाज में लगातार हिंसा और कलह का माहौल बनता जा रहा है। एक वक्त हुआ करता था, जब सोशल मीडिया के जरिए लोग अपनी बातों को रखा करते थे, मगर अब सोशल मीडिया पर लोगों को अपनी बात रखने से पहले 10 बार सोचना पड़ रहा है। कब किसकी भावनाएं आहत हो जाए किसी को नहीं पता है। कभी आपने अपनी पोस्ट पर गलती से किसी ऐसा शब्द का इस्तेमाल कर दिया, जिससे की किसी की भावनाएं आहत हो जाए तो आप के खिलाफ हजारों लोग खड़े हो जाएंगे। मगर उन लोगों के खिलाफ कोई खड़ा नहीं होता जो लोग दूसरों को इनबॉक्स में जाकर गाली गलौज, धमकियां देते हैं और महिलाओं को परेशान करते हैं।

सोशल मीडिया कहीं ना कहीं भारतीय समाज और संस्कृति को विकृत कर रहा है। हमारे धार्मिक गुरु भी सोशल मीडिया पर अपने फॉलोवर्स बढ़ाने में लगे हैं। लाइक, फॉलोअर्स और कमेंट के चक्कर में आज हम अपने व्यक्तिगत जीवन को तबाह करते जा रहे हैं। सोशल मीडिया के चक्कर में कई शादियां टूट रही हैं और कई ऐसी घटनाएं सामने आती हैं जो दिल दहला देती हैं।

कौन व्यक्ति कब क्या झूठ बोलकर समाज को गुमराह कर रहा है, इसका पता किसी को नहीं है। सोशल मीडिया ने भारतीय समाज को ऐसा बना दिया है कि अगर मैं हिंदू हूं तो मुझे मुसलमानों की कमियां ही दिखाई देंगी और अगर मैं मुस्लिम हूं तो मुझे हिंदुओं की कमियां ही दिखाई देंगी। जबकि हकीकत कुछ और होती है। हर समाज, हर धर्म और हर जाति में ऐसे इंसान हैं, जो अच्छे भी हैं और बुरे भी हैं। आज हमें जागरूक होने की जरूरत है।

सोशल मीडिया के जरिए भारतीय समाज को कट्टर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। अगर इसी तरह कट्टरता फैलती रहेगी तो इस का नुकसान भारत में रह रहे हम सभी लोगों के जीवन पर पड़ेगा। इसलिए हमारा फ़र्ज़ बनता है की हम सभी को सोशल मीडिया पर फैल रही धार्मिक कट्टरता और जातीय कट्टरता से ऊपर उठकर भारतीय हितों को ध्यान में रखते हुए इस कट्टरता को फैलने से रोकें और एक बेहतर समाज के निर्माण में अपना योगदान दें।

दीपक कोहली

अतिथि रचनाकार

आत्मनिर्भरता

हमें पूरे भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिये पहले अपने आप से शुरूआत करनी होगी। सबसे ज्यादा जरूरी है अपने घर की हर बेटी को अच्छी शिक्षा देना और उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिये प्रेरित करना क्योंकि समय किसी ने नहीं देखा, आज अच्छा है कल बुरा भी हो सकता है। कल भविष्य में परिस्थितियां खराब हो, घर में भरण पोषण करने वाला कोई न हो तो हम अपने पैरों पर खड़े हो सके और परिवार को चला सकें। आत्मनिर्भरता बेटियों के लिये क्यों आवश्यक है इसके लिये मैं आपके समक्ष एक आँखों देखी कहानी का वर्णन करती हूँ।

मैं, उत्तर प्रदेश के एक छोटे से कस्बे इगलास में रहती थी। वहाँ मेरे घर के पास एक लड़की रहती जिसका नाम राधा था वह अपने घर में सबसे छोटी थी। उसके तीन बड़े भाई थे। उसके पिता जी कोई छोटी सी मजदूरी करते जिसमें उन्हें बहुत कम पैसे मिलते। उससे उनका घर का खर्चा नहीं चल पाता था, जिससे उसके घर आये दिन क्लेश होता। कभी राधा की माँ से तो कभी उनके अपने भाइयों से, किसी न किसी बात पर झगड़े होते। जब राधा मात्र छः साल की थी तब घर में ज्यादा आर्थिक तंगी और झगडे से परेशान हो कर उसके पिताजी ने एक दिन विषाक्त पदार्थ का सेवन कर लिया। जब तक उन्हें अस्पताल लाये तब तक उन्होंने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। उसके पिता की मृत्यु के बाद घर की स्थिति और भी ज्यादा खराब हो गई। चार बच्चों को पालने की जिम्मेदारी अब उसकी माँ पर आ गई। ससुराल का कोई भी सहारा नहीं मिला।

माँ के पास थोड़ी सी जमीन थी उसमें खेती-बाड़ी करके घर का खर्चा चलाने लगी, परन्तु रात-दिन मेहनत करने के बाद भी वह इतना नहीं कमा पाती थी कि बच्चों को ज्यादा पढ़ा सके। राधा का बड़ा भाई पिता के जाने के बाद और माँ घर में बच्चों पर कम ध्यान दे पाती थी जिसके कारण वह गलत संगत में पड़ गया। राधा की माँ की जिंदगी बहुत संघर्षमय हो गई थी क्योंकि वह भी पढ़ी लिखी नहीं थी। अक्सर बेटे की शिकायतें बाहर वाले आ कर करते, यहाँ तक कि पुलिस भी बेटे को पकड़ के ले गई । वह काफी समय जेल में रहा। लेकिन कहते है ना माँ तो माँ होती है बेटा कपूत हो सकता है पर माँ कुमाता कभी नहीं बन सकती | जब वह जेल से आया तो माँ फिर भी उसे समझाती, चिन्ता करती, धीरे-धीरे वक्त बीतता गया। राधा भी बड़ी हो गई। जैसे तैसे करके उसकी माँ ने उसको हाईस्कूल तक पढ़ा दिया पर उनके पास आगे पढ़ाने के लिये पैसा नहीं था। जैसे ही वह 20 साल की हुई, उसकी माँ ने उसकी शादी कर दी। जैसे कि हर माँ चाहती है उसकी बेटी ससुराल में सुखी रहे। उन्होंने अपने हिसाब से सही और छोटा परिवार देखा। राधा की ससुराल में केवल उसकी सास और पति थे । उसके ससुर का देहांत हो चुका था और सास के बस वही अकेला बेटा था, दूसरी कोई सन्तान नहीं थी। सब कुछ

अच्छा चल रहा था। पति नौकरी करता था। राधा के एक बेटी हो गई । जब वह दो साल की हुई तो दूसरी बेटी हो गई क्योंकि सास को पोते की चाह थी इसलिये उन्होंने फिर दबाव डाला राधा पर बच्चे के लिये। लेकिन जो भाग्य में होता है हमें वही मिलता है। उसके तीसरी सन्तान भी बेटी ही हुई। जल्दी जल्दी कम उम्र - में तीन बेटियों की जिम्मेदारी उस पर भी आ गई। लेकिन हमारे समाज में आज भी लोगों की सोच वही है कि बेटा नहीं तो कुछ नहीं। चाहे घर में आमदनी इतनी ना हो, परवरिश ठीक से न हो पाये, चाहे - बच्चे ज्यादा हो जाये लेकिन बेटा हो जाये। राधा के ऊपर भी वही दबाव था। वह फिर गर्भवती हो गई। इस बार उसके बेटा हो गया। उसके अब चार बच्चे हो गये | अब घरवाले खुश थे। घर के काम और बच्चों की देखभाल में उसकी जीवन फिर भी सही चल रहा था। एक दिन जब राधा का पति नौकरी से घर आ रहा था तब अचानक उसका एक्सीडेन्ट हो गया और वह वहीं सड़क पर मर गया। जैसे ही राधा को पति की मृत्यु की सूचना मिली, उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई। उसकी शादी को मात्र दस साल हुए, उसकी उम्र बस तीस साल ही थी। उसकी जिंदगी एक झटके में बिखर गई। इतना बड़ा दुख सहन कर पाना मुश्किल था। वह गहरे सदमे में चली गई। पर सबके समझाने पर वह खुद को सम्भालती रही। अपने बच्चों के लिये, उन छोटे 2 बच्चों को कौन देखता, फिर घर पर कोई आदमी नहीं रहा। सास को मात्र 10 हजार रुपये मिलते पेंशन के जिसमें घर खर्च चलाना इतनी महंगाई में बहुत ज्यादा मुश्किल हो गया। आज राधा खुद नहीं समझ पा रही कि कैसे घर चलाये, बच्चों को पढ़ाये लिखाये। जो कुछ सालों पहले उसकी माँ के सामने समस्या थी वहीं उसके सामने आ गई। अब वह क्या नौकरी करें क्योंकि वह भी ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं है। अब उसकी जिंदगी बहुत नीरसभरी हो गई। वह सोचती है कि काश आर्थिक तंगी न होती तो वह पढ़ लिख कर कुछ कर लेती। इसीलिये चाहे कुछ भी हो, अगर पैसा नहीं है ज्यादा पढ़ाने के लिये तो, बेटियों को कोई हुनर सिखाओ जैसे सिलाई, बुनाई या डांस, कुछ भी। जिससे की कभी भविष्य में समय हमारा साथ न दे तो हम इस काबिल तो हो कि अपना और अपने बच्चों का पेट भर सके। क्योंकि दुख में कोई किसी का साथ नहीं देता। उसे सिलाई भी नहीं आती जिससे वह कुछ कमा पाती। अब वह बस आंसू छिपाती और मन में अपने भाग्य को कोसती रहती है।

लवली शर्मा,
अतिथि रचनाकार

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया" -डॉ. राजेंद्र प्रसाद

ग़ज़ल

माता-पिता अपनी हकीकत को बच्चों पर वार देते हैं।
उनको पालने-पोसने में क्या-क्या उधार लेते है ।।

उस पीड़ा को क्या नाम दें, जो सही उन्होंने जीवन-भर,
अपना सर्वस्व लुटाकर अपनी इच्छाओं को मार लेते हैं ।।

गलती जो करें बच्चे, डॉट-डपट पिलाई जाती है
वे करते हैं अपने अन्दर परिवर्तन कुछ आदतें सुधार लेते हैं।

किशोर वय होते ही कुछ खर्चा अधिक बढ़ जाता है,
इन खर्चे के आमद को माता पिता स्वीकार लेते हैं ।।

नहीं मानों उनका कहना तो व्यर्थ आफत आ जाती है,
सामजस्य बनाकर रखों तो ठीक नहीं तो इज्जत उतार देते है।

माथा टेको इनके आगे, ईश्वर समतुल्य कहलाते है.
अपनी व्यवस्था आप ही गढ़ते, तुमको ये नकार देते हैं ।।

अपने समक्ष तुमको नहीं गिनते, गिनते स्व को है,
चरण-स्पर्श भूल गये, बस अपने को संवार लेते है ।।

समझदारी में सबसे अव्वल रहकर भी परेशान है ये
झूठे सब आदर्श बताते, सच का सहारा कभी-कभार लेते हैं।

रामानन्द शर्मा
(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ग़ज़ल

विचार की उम्र होती है, बस पल दो पल,

क्षणांश में जाते हैं मिट, मन से जाते है निकल ॥

तैरती हवाओं में फैले, वितानों में चाक-चौबन्द,

सजधज निकलेंगे फिर से, आने की करेंगे पहल ||

छितराये बादल की तरह, करते रहते हैं भ्रमण,

बरस जाते है जमीं पर, कभी भिगो देते है थल ।।

रूप धरकर, वेश बदल कर आते है मेरे द्वार,

आ जाते है वर्तमान में, जो आये थे कभी कल !!

पदचाप का भी नहीं देते, बिलकुल भी अहसास

कभी साधु बनकर, टपकते, कभी बन जाते खल ।।

हवा में उड़ाकर ले जाते है, मन को कभी,

कभी देते हैं उल्लास, कभी करते है विकल !!

कभी लहर बनकर छा जाते है ये विचार,

कभी दामन पकड़कर कहते है, अब तो चल ।।

जीवन की दुआ माँगता हूँ इनसे हर घड़ी हर कदम,

जाना है उस पार निश्चित ही, मृत्यु तो है अटल ।।

रामानन्द शर्मा

(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षक

टूटी चप्पल

"पता नहीं ये सामने वाला सेठ हफ्ते में 3-4 बार अपनी चप्पल कैसे तोड़ आता है?" मोची बुदबुदाया, नजर सामने की बड़ी किराना दूकान पर बैठे मोटे सेठ पर थी।

हर बार जब उस मोची के पास कोई काम ना होता तो उस सेठ का नौकर सेठ की टूटी चप्पल बनाने को दे जाता। मोची अपनी पूरी लगन से वो चप्पल सिल देता की अब तो 2-3 महीने नहीं टूटने वाली। सेठ का नौकर आता और बिना मोलभाव किये पैसे देकर उस मोची से चप्पल ले जाता। पर 2-3 दिन बाद फिर वही चप्पल टूटी हुई उस मोची के पास पहुंच जाती।

आज फिर सुबह हुई, फिर सूरज निकला। सेठ का नौकर दूकान की झाड़ू लगा रहा था।

और सेठ........

अपनी चप्पल तोड़ने में लगा था, पूरी मश्शकत के बाद जब चप्पल न टूटी तो उसने नौकर को आवाज लगाई।

"अरे कजोड़, इसका कुछ कर, ये गंगू भी पता नहीं कौनसे धागे से चप्पल सिलता है, टूटती ही नहीं।"

कजोड़ आज सारी गांठे खोल लेना चाहता था "सेठ जी मुझे तो आपका ये हर बार का नाटक समझ में नहीं आता। खुद ही चप्पल तोड़ते हो फिर खुद ही जुडवाने के लिए उस गंगू के पास भेज देते हो।"

सेठ को चप्पल तोड़ने में सफलता मिल चुकी थी। उसने टूटी चप्पल कजोड़ को थमाई और रहस्य की परते खोली... "देख कजोड़ जिस दिन गंगू के पास कोई ग्राहक नहीं आता, उस दिन ही मैं अपनी चप्पल तोड़ता हूं... क्यों की मुझे पता है... गंगू गरीब है... पर स्वाभिमानी है, मेरे इस नाटक से अगर उसका स्वाभिमान और मेरी मदद दोनों शर्मिंदा होने से बच जाते है तो क्या बुरा है।"

आसमान साफ था पर कजोड़ की आँखों के बादल बरसने को बेक़रार थे।

लोकेन्द्र सिंह

अतिथि रचनाकार

प्रतिशोध

डॉ. मीना सभी बहनों में सबसे छोटी थी । पिता मामूली क्लर्क थे । सभी बहनों की शादी संभ्रांत घरानों में की गई थी । चौथे नम्बर की मीना की इच्छा शुरू से ही डाक्टर बनने की थी । इसलिए अपनी हैसियत से बाहर जाकर पिता ने उसकी पढाई का खर्च पूरा किया फिर उसी के बराबर डॉ. राघव से उसकी शादी की तैयारियां शुरू की ।

सुबह से ही आँगन में शहनाइयों की गूंज सुनाई दे रही थी । सहेलियाँ मीठी छेड़खानी कर रही थी । पिता ने लड़के वालों की इच्छानुसार दहेज का सामान जुटा लिया था । डॉ. मीना के मन में भी शादी के सपने बुनकर हल्की गुदगुदी हो रही थी । बारात का समय हो रहा था । सभी वधू-पक्ष बारात के स्वागत की तैयारियों में जुटे थे । अचानक मीना के पिता को वर पक्ष में कुछ शोरगुल सा सुनाई दिया । वे अनहोनी की आंशका से भयभीत हो गये । वर के पिता कहने लगे कि उन्हे दहेज में लक्जरी कार चाहिए। नहीं तो बारात अन्दर नहीं जाएगी और शादी भी सम्पन्न नहीं हो सकेगी ।

डॉ. मीना के पिता को मानो काटो तो खून नहीं। वे एकदम हतप्रभ रह गये। उन पर तो मानो वज्रपात हो गया। क्योंकि जितना भी धन था उन्होंने शादी में खर्च कर दिया था। अब उनके पास देने के लिए कुछ भी शेष नहीं था। वे हृदय के मरीज भी थे। अचानक ही उनके सीने में दर्द शुरू हुआ और वे दिल के दौरे के शिकार हो गये। आपातकालीन परिस्थितियों में उन्हें अस्पताल ले जाने लगे। परन्तु शायद उनकी सांसे इतनी ही शेष थी। उन्होंने लग्न मण्डप में ही दम तोड़ दिया। विवाहस्थल पर तो मानो कोहराम मच गया। डा. मीना पिता को मृत देखकर बर्दाशत नहीं कर पाई और वह भी वहीं बेहोश हो गई ।

दहेज की चिता में एक पिता भस्म हो गये। डॉ. मीना को ज्यादा गुस्सा इस बात पर आया कि डॉ राघव ने भी अपने पिता की इस हरकत का विरोध नहीं किया। डॉ मीना ने इस शादी के लिए मना कर दिया तथा बारात बिना दुल्हन के ही वापिस चली गई।

क्या नारी जीवन की यही नियति है? क्यों बेटी का पिता उसके पैदा होते ही उसके दहेज का सामान जुटाने लगता है ? हमारे समाज में कब महिलाओं को बराबर का सम्मान मिलेगा ? तब शायद कोई पिता अपने प्राणों की आहूति नहीं देगा।

रूचि गुप्ता
लेखापरीक्षा लिपिक

मेरा श्राद्ध

आज़ ऊपर बैठी रूह ने बड़ा
ठहाका लगाया है,
देखो ! आज़ मेरे बच्चों ने पंडित
जी को बुलाया है।
कितने जतन से पकवान बनाया है
और बड़े ही आदर भाव से
खिलाया है।
जिसके लिए मुझे तरसाया था
वो ही सब आज़ बनाया है।
और तो और कोवे और कुत्ते
को भी दावत में बुलाया है,
बड़े ही प्यार से इनको भी खाना
खिलाया है।
जगह नहीं थी मेरे लिए घर में,
अतः वृद्धाश्रम में भगाया था।
देखो ! देखो ! आज़ मेरा फोटो
भगवान के साथ ही लगाया है।
थोड़ा-बहुत पैसा भी नहीं था मेरे लिए लेकिन...
आज़ पंडित जी को पांच सौ का नोट
मिठाई का डिब्बा और
नये कपड़ों का जोड़ा

मेरा नाम लेकर पहनाया है।

देखो ! कैसे दिखावा कर रहे हैं

अपने आप से ही छलावा कर रहे हैं,

ये सब मेरे भूत बन कर सताने के

डर से डर कर, कर रहे हैं।

अरे ! इन्हें इतना नहीं पता

क्या मां बाप होते हैं कभी खफ़ा ?

बस ! सभी बच्चों से इतनी सी गुजारिश है...

मेरे साथ रहने वालों की भी सिफ़ारिश है...

मरने के बाद नहीं,,,

मां बाप का जीते जी... करो सम्मान

नहीं चाहते हैं वो पैसे, ना चाहे पकवान ।

बस ! थोड़ा सा समय निकालो

थोड़ी सी घर में जगह दो,

और रखो... उनका ध्यान

ओम प्रकाश गुप्ता

(से.नि.) लेखाधिकारी,

राजस्थान सरकार

हिंदी हमारी राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है-- सुमित्रानंदन पंत

लोग पत्थर के हुए है

आंखों में नहीं हैं पानी
ना जिंदगी में है रवानी
दिल से दिल अलग हुए है
लोग पत्थर के हुए है।।
अब ईमान बिक रहा है
झूठ सत्य बन रहा है
कोई खोज ना खबर है
चल रहे उलटी डगर है
मन मलिन बने हुए है
लोग पत्थर के हुए है।।
अब कोई ना किसी का
जो धनी है सब उसी का
मन में भरी कलुषता
जीवन हुआ है सस्ता
अब इंसान नहीं रहे है
लोग पत्थर के हुए है।।
जो निर्बल और बेचारा
उसका न कोई सहारा
संवेदना नहीं रही है
मर्यादाएं लुट रही है
सब अजनबी बने हुए है
लोग पत्थर के हुए हैं।।
चेहरों पर है उदासी
आँखे हुई हैं प्यासी
उमर हो गई है पूरी
आस रह गई अधूरी
चिंता में पड़े हुए है
लोग पत्थर के हुए है।।
इंसानियत बदल रही है
हैवानियत बढ़ रही है
होठ भी है सिले हुए
मौत से सब डरे हुए
सब अपने में लगे हुए है
लोग पत्थर के हुए है।।

सुनील कुमार खूंटेटा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अपने वतन की सबसे प्यारी भाषा,
हिंदी जगत की सबसे न्यारी भाषा

कार्यालय द्वारा छः माही में राजभाषा हिन्दी में किये गये कार्य का प्रगति प्रतिवेदन

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अन्तर्गत विनिर्दिष्ट कार्यालय आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागज-पत्र, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचनाएँ और निविदा प्रारूप द्विभाषी रुप (अंग्रेजी और हिन्दी) में जारी किए जाने चाहिएँ। वर्ष के दौरान कुल **06** कार्यालय आदेश द्विभाषी रूप से जारी किए गए।

राजभाषा विभाग (राजभाषा नियम 5 के अन्तर्गत) के अनुसार हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों **15,210** में से **7,171** पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया गया। शेष पत्रों का उत्तर दिया जाना अपेक्षित नहीं था। छः माही के दौरान अंग्रेजी में कुल 883 पत्र प्राप्त हुए जिसमें से 427 पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए गए।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 'क' एवं 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों से 100% एवं 'ग' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों से 65% पत्राचार हिन्दी में करना अनिवार्य है। इन क्षेत्रों में कार्यालय द्वारा छः माही में कुल **20,287** पत्र भेजे गए जिनमें से हिन्दी में **20,067** पत्र एवं अंग्रेजी में मात्र **220** पत्र प्रेषित किए गए।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा फाइलों में 'क' क्षेत्र में 75%, 'ख' क्षेत्र में 50% एवं 'ग' क्षेत्र में 30% टिप्पण हिन्दी में लिखे जाने अनिवार्य हैं। कार्यालय द्वारा वर्ष में कुल **12,772** टिप्पण लिखे गए जिनमें से हिन्दी में लिखे गए टिप्पणों की संख्या **12,094** है जो कि निर्धारित लक्ष्य से अधिक है।

इस छः माही के दौरान कार्यालय द्वारा **291** निरीक्षण प्रतिवेदन हिन्दी में जारी किए गए। कार्यालय में यूनिकोड-इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड प्रशिक्षण व्यवस्था की स्थापना की गई व इस दौरान कुल **15** अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया ।

इस छः माही में **02** हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें कुल **25** कार्मिकों द्वारा भाग लिया गया। कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की **02** तिमाही बैठकों का आयोजन कार्यालय प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया एवं सभी सदस्य शाखाधिकारियों ने उक्त बैठकों में भाग लिया। सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग के अन्तर्गत कार्यालय की वेबसाइट पूर्ण रूप से द्विभाषी एवं अद्यतन है।

छः माही में अन्य कल्याणकारी गतिविधियाँ

कार्यालय में 15 अगस्त को गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा ध्वजारोहण किया गया एवं कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

दिनांक 21 नवम्बर 2022 से 25 नवम्बर 2022 तक कार्यालय में ऑडिट सप्ताह मनाया गया जिसमें विभिन्न विषयों पर कार्यशालाएं आयोजित की गई एवं विभिन्न विभागों के विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किए।

14 सितंबर 2022 से 28 सितंबर 2022 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को विभागाध्यक्षों द्वारा सम्मानित किया गया।

15 सितम्बर से 15 अक्टूबर तक चारों कार्यालयों में अन्तरविभागीय विभिन्न खेलकुद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को पुरस्कृत किया गया

श्री अरूण कुमार शर्मा
कल्याण अधिकारी

हिंदी भाषा नहीं, भावों की अभिव्यक्ति है। यह मातृभूमि पर, मर मिटने की शक्ति है।

पाठकों के अभिमत

देश के विभिन्न कार्यालयों से पिछले अंक पर प्रतिक्रिया स्वरूप हमें सुधी पाठकों के जो अभिमत प्राप्त हुए, उनमें से कुछ पत्रों के अंश साभार प्रकाशित कर रहे हैः-

संदर्भित पत्र के साथ अपकी पत्रिका 'लेखापरीक्षा अर्चना' का नवीन अंक प्राप्त हुआ । आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें । विभागीय पत्रिकाएं अपने कार्यालय एवं अपने राज्य की संस्कृति और कार्यप्रणाली का उत्तम चित्रण करती है । इनके माध्यम से हमें कार्यालय एवं समाज में हो रही घटनाओं का सुन्दर चित्रण प्राप्त होता है । आपकी पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं समान रूप से सरल, सहज, रोचक एवं ज्ञानवर्धक तो है ही इसके अतिरिक्त पत्रिका की साज सज्जा एवं मुद्रण भी अति उत्तम है, जिसके लिए लेखकों एवं संपादक मंडल के सदस्यों को विशेष बधाई ।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मंडल के सदस्यों और हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका 'लेखापरीक्षा अर्चना' के उज्जवल भविष्य के लिए 'सुगंधा' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "अर्चना" के 17वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई । सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है । संकलित समस्त लेख एवं रचनाऐं सरस एवं पठनीय है । विशेषकर बद्रीनारायण शर्मा जी का आलेख 'कलयुग आ गया', श्री पदम चन्द गॉंधी जी का आलेख 'निर्भय जीवन का आधार - परिग्रह', श्री अरूण कुमार शर्मा जी की कविता 'ढाई अक्षर प्रेम का', डॉ. नवल किशोर सेठी जी का आलेख 'वैश्वीकरण एवं भारतीय संस्कृति' श्री सुनील कुमार खूटेंटा जी की कविता 'हमने क्रूर असुर संहारे' और श्री वीरेन्द्रर सिंह जी का आलेख 'आजादी के अमृत महोत्सव के सम्बन्ध में' अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र है । आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अर्चना' इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है ।

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता

उपरोक्त संदर्भित विषयान्तर्गत लेख है कि आपके कार्यालय द्वारा अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 17वें अंक की ई-प्रति इस संस्थान को प्राप्त हुई, तदर्थ

धन्यवाद । पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई एवं साधुवाद तथा पत्रिका को सफल बनाने एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए संस्थान परिवार की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं ।यह पत्र महानिदेशक महोदय के अनुमोदन से जारी किया जाता है ।

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, प्रयागराज

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'लेखापरीक्षा अर्चना' के सत्रहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं । हिन्दी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), हिमाचल प्रदेश, शिमला

आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा अर्चना' के 17वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताऐं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं । विशेषकर श्री अरूण कुमार शर्मा, कल्याण अधिकारी की रचना 'ढाई अक्षर प्रेम के', श्री वीरेन्द्र सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा का लेख 'आजादी के अमृत महोत्सव के सम्बन्ध में' तथा श्री ओम प्रकाश गुप्ता, से. नि. लेखाधिकारी की रचना 'बसंत ऋतु' उललेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है ।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की और से हार्दिक शुभकामनाएं ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-।।), महाराष्ट्र, नागपुर

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका 'लेखापरीक्षा अर्चना' के 17वें संस्करण की एक ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम, बेलतला, गुवाहाटी

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" का 17वां अंक इस कार्यालय को ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई । धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएं एक से बढकर एक है विशेषतः श्री राजीव भाटिया कृत "सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली", श्री गुरू दयाल कृत "माँ- एक सबसे प्यारा रिश्ता" एवं डॉ. रानी दाधीची

कृत "स्वतंत्रता सेनानियों के उत्साह में रामायण मे प्रतिपादित विश्वबंधुत्व का योगदान" अत्यन्त प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चेन्ने का कार्यालय

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 17वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई । सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक है । पत्रिका में मुख्यत: ढाई अक्षर प्रेम के, माँ- एक सबसे प्यारा रिश्ता, बसंत ऋतु, कलयुग आ गया, गजल इत्यादि आकर्षण का मुख्य केन्द्र है । आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी ।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" का 17वां अंक प्राप्त हुआ । सहर्ष धन्यवाद ।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक है । प्रस्तुत अंक सराहनीय पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है ।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), उत्तराखण्ड

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा अर्चना' का 17वां अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है । पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं । विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है । पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बैंगलोर

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 17वें अंक की ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है ।

पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है । इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं । पत्रिका में श्री वीरेन्द्र सिंह

की रचना ‘आजादी के अमृत महोत्सव के सम्बन्ध में”, डा. रानी दाधीची की रचना “स्वतंत्रता सेनानियों के उत्साह में रामायण मे प्रतिपादित विश्वबंधुत्व का योगदान”, श्री राजीव कुमार भाटिया की रचना “सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली”, श्री गुरू दयाल की रचना “माँ- एक सबसे प्यारा रिश्ता”, डॉ. नवल किशोर सेठी की रचना “वैश्वीकरण एवं भारतीय संस्कृति”, श्री लोकेन्द्र सिंह की रचना “माँ की सीख”, श्री सुभाष कुमार चतुर्वेदी की रचना “सीसीएस (आचरण) नियम 1964...सेवक के कर्तव्य”, श्री सुनील कुमार खूंटेटा की रचना “हमने क्रूर असुर संहारे”, श्री हनुमान गुप्ता की रचना “सुंदरकाण्ड की हमारी दिनचर्या विशेषत: कार्यालय के कार्य में उपयोगिता”, श्री बद्री नारायण शर्मा की रचना ‘‘कलयुग आ गया है’’, श्री पदम चन्द गांधी की रचना “निर्भय जीवन का आधार - अपरिग्रह” सुश्री प्रज्ञा पाठक की रचना “माँ-एक ईश्वर का वरदान”, श्री ओम प्रकाश गुप्ता की रचना “जिन्दगी के चार कदम”, और श्री किशोर कुमार की रचना “मोबाईल क्रांति के फायदे एवं नुकसान”, आदि रचनाएं विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं । पत्रिका का मुख्य पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है, जिसमें आजादी के अमृत महोत्सव को बहुत ही सुंदर तरीके से दर्शाया गया है तथा अंतिम पृष्ठ पर भी स्वतंत्रता सेनानियों और हिन्दू मुस्लिम भाई - चारे का चित्र बहुत ही सुंदर तरीके से दर्शाया गया है, जिससे समाज और देश में स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति आदर भाव और भाई-चारे की भावना का विकास होता है । पत्रिका मे कार्यालयी झलकियां पत्रिका को सुंदरता मे वृद्धि करती है । वैद्युतिक रोशनी में छटा बिखेरता कार्यालय का चित्र बहुत ही सुंदर लग रहा है । पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई ।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” के 17वें अंक की ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका का मुख पृष्ठ व साज-सज्जा खूबसूरत व मनमोहक है। पत्रिका का बाहरी व भीतरी साज-सज्जा पत्रिका को विशिष्ट बना रहे है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में रचनात्मक, सकारात्मक एवं नवीन विचारों की छवि प्रलक्षित होती है।

पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय में राजभाषा हिंदी की दशा एवं दिशा में सकारात्मक प्रयास परिलक्षित होंगे। पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटी बनाने के लिए रचनाकारों को एवं संपादक मण्डल को बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह)-II, महाराष्ट्र, नागपुर

लेखापरीक्षा शब्दावली

Ab initio	आरम्भ करना	Adjourn	स्थगित करना
Capital expenditure	पूंजीगत व्यय	Censure Motion	निन्दा प्रस्ताव
De Facto	वस्तुतः,वास्तविक	De Jure	विधिवतः
Ex-gratia	अनुग्रहपूर्वक	Ex-officio	पदेन
Forfeiture	जब्ती	Framework	रूपरेखा
Ibid	वहीं	Inter alia	अन्य बातों के साथ साथ
Joint annuity	संयुक्त वार्षिकी	Modes operandi	कार्य प्रणाली
Mutatis Mutandis	यथोचित परिवर्तनों सहित	Quasi-permanent	स्थायीवत्
Per Capita	प्रति व्यक्ति	Redressal	निवारण
Suo Moto	स्वतः, प्रेरणा	Versus	बनाम
Reciprocal	पारस्परिक	Manifesto	घोषणा पत्र
Whistleblower	अग्रचेतक	Marketing cost	विपणन लागत
Maternity Leave	प्रसूति अवकाश	Questionnaire	प्रश्नावली
Prescribed format	निर्धारित प्रपत्र	Prior approval	पूर्व अनुमोदन

हमें संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करेंगे बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास करते रहेंगे।

हम लड़के हिन्दुस्तान के

जब से मानव ने पृथ्वी पर जन्म लिया ।
हमने उसको तन ढकने को वस्त्र दिया ।।
तन ढकने से मनुष्य को देखा जाता है सम्मान से ।
तरह-तरह के वस्त्र बनाते हम लड़के हिन्दुस्तान के ।।

हम से ही है चक्रवर्ती सम्राट अशोक महान ।
विश्व शांति, अहिंसा उपदेश देने में आगे रहा हिन्दुस्तान ।।
उसके साम्राज्य में हिन्दुस्तान को देखा जाता था सम्मान से ।
इतिहास बनाते हम लड़के हिन्दुस्तान के ।।

राजा रामचन्द्र को केवट ने कराई गंगा पार ।
परन्तु आज तक उसकी मजदूरी है उधार ।।
कोई ग्रन्थ नहीं है बढ़ कर गीता के ज्ञान से ।
कृष्ण भक्ति में भी आगे रहते हम लड़के हिन्दुस्तान के ।।

कोली राजा शुद्धोदन के पुत्र थे गौतम बुद्ध ।
बौद्ध धर्म के उपदेश दिये उन्होंने शुद्ध ।।
बुराई त्याग कर विदेशियों ने बौद्ध धर्म अपनाया ध्यान से ।
धार्मिक बने रहते हम सदा, लड़के हिन्दुस्तान के ।।

सन्त कबीर ने आडम्बर त्याग कर बनाया नया पंथ ।
उनके आदेशों को अपनाते आज भी दुनिया के संत ।।
अंत कर दिया बुराइयों का नया युग बनाया सम्मान से ।
नए-नए युग बनाते लड़के हिन्दुस्तान के ।।

मुगलों के छक्के छुड़ाकर जीते कई किले ।
वीर शिवा सेनापति तानाजी से बार-बार गले मिले ।।
मराठा साम्राज्य बनाया समृद्ध सीना तान के ।
युद्ध में सदैव आगे रहते, हम लड़के हिन्दुस्तान के ।।

आजादी के लिये लक्ष्मी बाई ने फैलाई चारों ओर क्रांति ।
उसी को कहते हैं हम, सन् 1857 की क्रांति ।।
इस क्रांति से डर गये फिरंगी हिन्दुस्तान से ।

स्वतंत्रता संग्राम में आगे रहते हम लड़के हिन्दुस्तान के ।।

झलकारी बाई ने नारी शक्ति को किया नमन ।

फिरंगी शासन का किया उसने हमेशा दमन ।।

भारतीय नारी को आज देखा जाता सम्मान से ।

नारी शक्ति की पूजा करते हम लड़के हिन्दुस्तान के ।।

लेखापरीक्षा करते हम ग्राम पंचायत से संसद तक ।

सरकारी धन बचाते हम, राष्ट्र को आते पसन्द ।।

देश के कोने-कोने में लेखा परीक्षक को देखा जाता सम्मान से ।

सरकारी धन का दुरूपयोग रोकते, हम लड़के हिन्दुस्तान के ।।

भारत की संचित निधि, आकस्मिक निधि और लोक लेखा ।

उनके खर्चे होने का, हमने सदा ही नियम देखा ।।

देश के धन से हो विकास, नियम और सम्मान से ।

लेखा परीक्षक बन जाते हैं हम, लड़के हिन्दुस्तान के ।।

सभी राज्यों में रहते हम, अलग-अलग हमारी बोली ।

जाग गया लेखा परीक्षक अब, कहता मदन लाल कोली ।।

सारी दुनिया में समृद्ध हो भारत, रहे बड़े ही सम्मान से ।

देश को अखण्ड भारत बनाते, हम लड़के हिन्दुस्तान के ।।

मदन लाल कोली

(से.नि.) लेखापरीक्षा अधिकारी

विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है। - वाल्टर चेनिंग

महालेखाकार कार्यालय परिसर में स्थित चारों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ऑडिट सप्ताह - 2022 के दृश्य